नवम अध्याय

नाटक एवं एकांकी तथा इतर हिन्दी

गद्य साहित्य (कथा-साहित्य एवं नाटक साहित्य से इतर)

संबंधी शोध-कार्य ः वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन

9.1 नाटक एवं एकांकी साहित्य संबंधी शोध-कार्य ः वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन

9.2 इतर हिन्दी गद्य-साहित्य (निबंध, जीवनी, संस्मरण तथा आत्मकथा इत्यादि) संबंधी शोध-कार्य ः वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन

इससे पूर्व अध्याय में कथा-साहित्य संबंधी शोध-कार्य का वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन किया गया है। इस अध्याय में नाटक एवं एकांकी तथा इतर हिन्दी गद्य साहित्य (कथा-साहित्य एवं नाटक साहित्य से इतर) संबंधी शोध-कार्य का वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन किया गया है। इस अध्याय को आगे **2** उपाध्यायों में विभक्त किया गया है। नाटक एवं एकांकी साहित्य संबंधी शोध-कार्य तथा इतर हिन्दी गद्य साहित्य (कथा-साहित्य एवं नाटक साहित्य से इतर) संबंधी शोध-कार्य।

9.1 नाटक एवं एकांकी साहित्य संबंधी शोध-कार्य ः वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन

विवेच्य विश्वविद्यालयों में नाटक एवं एकांकी साहित्य संबंधी **102** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं, इनका क्रमानुसार वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन इस प्रकार है-

1. शोधार्थी - कपूर, प्रेमनाथ

शोध-विषय - हिन्दी नाटक और रंगमंच ः विविध आयाम **(1960-80)**

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - गोयल, जयभगवान

वर्ष - 1991

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **389** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नाटक और रंगमंच का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हिन्दी नाटक की विकास यात्रा के विविध आयामों का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में साठोत्तरी परिवेश के विविध आयामों का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में समकालीन नाटक के परिप्रेक्ष्य में कथ्यगत आयाम का चित्रण किया गया है। पंचम अध्याय में हिन्दी रंगमंच की विकास यात्रा के विविध आयामों का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में

समकालीन हिन्दी नाटक के परिप्रेक्ष्य में रंगमंचीय आयाम का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में नव्यतम आयाम के संदर्भ में नाटक और रंगमंच का विवेचन किया गया है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम व्यतिक्रम में हैं। विषय-सूची सही है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत उपलब्ध नहीं होते। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

2. शोधार्थी - डेविड

शोध-विषय - नाटक का संरचनात्मक विश्लेषण ः सिद्धान्त और अनुप्रयोग

(डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के संदर्भ में)

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - पाण्डेय, शशिभूषण 'शीतांशु'

वर्ष - 1991

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध 10 अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल 381 पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नाटक के संक्षिप्त परिचय के साथ, डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में संरचनावाद का तात्त्विक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में संरचनावाद विश्लेषण के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न प्रतिमानों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में नाटक की संरचनात्मक विश्लेषण प्रक्रिया का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में लाल के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में विवलित अनुप्रस्तुत संरचना का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में विपथित अग्रप्रस्तुत संरचना का चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय में समांतरित संरचना का उल्लेख किया गया है। अष्टम अध्याय में विरल संरचना का

अध्ययन किया गया है। नवम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। दशम अध्याय में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-नियमों का पालन करता है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। अध्यायीकरण में अध्यायों के समक्ष पृष्ठांकन नहीं किया गया है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षकों की संरचना की गई है। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा प्रभावशाली है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध का टंकण तथा जिल्दबंदी उत्तम हैं।

3. **शोधार्थी -** मीना

शोध-विषय - समकालीन हिन्दी नाटकों का समाजशास्त्रीय अध्ययन (**1960** से **1985** तक)

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - मेंहदीरत्ता, वीरेन्द

वर्ष - 1991

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **4** खंडों के अंतर्गत **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **414** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **3** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में साहित्य के समाजशास्त्र का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में **1960** से पूर्व के **6** दशकों का संक्षिप्त सर्वेक्षण किया गया है। द्वितीय खंड में **4** अध्याय हैं। चतुर्थ अध्याय में समकालीन हिन्दी नाटकों में अभिव्यक्त सामाजिक संरचना और सामाजिक संस्थाओं का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में समकालीन हिन्दी नाटकों में वर्णित अर्थव्यवस्था और परम्परित नैतिकता का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में समकालीन हिन्दी नाटकों में वर्णित सत्ता और राजनीति का परिचय दिया गया है। सप्तम अध्याय में नाटकों की संक्रमणकालीन भूमिका और समकालीन प्रासंगिकता को विश्लेषित किया गया है। तृतीय खंड में अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार,

शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। चतुर्थ खंड में समीक्षित नाटक तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा अस्पष्ट है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां बहुत हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी सामान्य स्तर के हैं।

4. शोधार्थी - मोदी, मीरा

शोध-विषय - साठोत्तर हिन्दी नाटक में व्यवस्था-चित्रण

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - निर्मम, हेमराज

वर्ष - 1991

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **271** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में व्यवस्था का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में साठोत्तर भारत की परिस्थितियों का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में साठोत्तर हिन्दी नाटकों का सर्वेक्षण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में साठोत्तर हिन्दी नाटकों के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक व्यवस्था का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में राजनीतिक व्यवस्था का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में आर्थिक व्यवस्था का चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय में सांस्कृतिक एवं नैतिक व्यवस्था का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक सही है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम बिल्कुल शीर्षक के नीचे अत्यंत बारीक मुद्रण में दिए गए हैं। विषय-सूची व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक दिए गए हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा कसी हुई है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां बहुत कम हैं। प्रबंध का टंकण ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

5. शोधार्थी - वत्स, राकेश

शोध-विषय - साठोत्तरी हिन्दी नाटकों का रंगमंचीय अध्ययन

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - अवस्थी, ओम्

वर्ष - 1991

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध 11 अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल 270 पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नाटक और रंगमंच की परस्पर निर्भरता का अध्ययन किया गया है। द्वितीय अध्याय में रंगमंचीय आधारभूमि पर नाटक की पहचान के मुख्य सूत्रों का विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में सन् साठ से पूर्व के हिन्दी नाटकों में रंगमंचीय संश्लेषण का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में साठोत्तरी हिन्दी नाटकों के रंगमंचीय वैशिष्टय का चित्रण किया गया है। पंचम अध्याय में साठोत्तरी नाटकों के परिप्रेक्ष्य में नाटककार के परिवर्तित व्यक्तित्व का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में सामान्य रंग-प्रक्रिया का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में मंचाभिकल्पन के नूतन आयामों का उल्लेख किया गया है। अष्टम अध्याय में ध्वनि एवं संगीत की भूमिका का अध्ययन किया गया है। नवम अध्याय में रंगदीपन के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। दशम अध्याय में वेशभूषा और रूपसज्जा की अर्थवत्ता का चित्रण किया गया है। एकादश अध्याय में अभिनय और अभिनेता की आधारभूत परिकल्पना का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमानुसार है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण ठीक हैं। अध्यायीकरण में अध्यायों के समक्ष पृष्ठांकन नहीं किया गया है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत अनुपस्थित हैं। प्रबंध की भाषा आसान है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां यदाकदा मिलती हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

6. शोधार्थी - अफ़ज़ल, जौहरा

शोध-विषय - डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों में पात्र-सृष्टि

विश्वविद्यालय - कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर

निर्देशक - ख़ान, मु. अयूब

वर्ष - 1992

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **2** खंडों के अंतर्गत **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **277** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **3** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में सामाजिक परिवेश का सामान्य अध्ययन किया गया है। द्वितीय अध्याय में डॉ. लक्ष्मीनारायण के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में हिन्दी नाट्य चिन्तन का अध्ययन किया गया है। द्वितीय खंड में **3** अध्याय हैं। चतुर्थ अध्याय में पात्र-सृष्टि का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में पात्र-सृष्टि का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

7. शोधार्थी - कौर, हरमिंदर

शोध-विषय - लक्ष्मीनारायण लाल के नाटक साहित्य का अध्ययन ः आधुनिकबोध के संदर्भ में

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - यादव, शकुंतला

वर्ष - 1992

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत शोध-प्रबंध **4** खण्डों के अंतर्गत **12** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **662** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **4** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में नाटककार लक्ष्मीनारायण लाल के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं तद्युगीन परिवेश का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में आधुनिकबोध का तात्त्विक विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में आधुनिकबोध के संदर्भ में कविता, नाटक, उपन्यास और कहानी का अध्ययन किया गया है। द्वितीय खंड में **7** अध्याय हैं। पंचम अध्याय में लक्ष्मीनारायण लाल के नाटक साहित्य का आधुनिकबोध के संदर्भ में व्यावहारिक अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में नगरबोध के फ्रेम में भौतिकता एवं अर्थ केन्द्रित समाज का विश्लेषण किया गया है। सप्तम अध्याय में मानवीय संबंधों के परिवर्तित रूपों के परिप्रेक्ष्य में पारिवारिक और परिवारेत्तर संबंधों के स्तरों का चित्रण किया गया है। अष्टम अध्याय में ऐतिहासिक और पौराणिक आख्यानों के नए संदर्भों का उल्लेख किया गया है। नवम अध्याय में पात्र एवं चरित्र परिकल्पना का अध्ययन किया गया है। दशम अध्याय में माणिक चेतना के नए स्तरों का उदघाटन किया गया है। एकादश अध्याय में रंग-योजना का चित्रण किया गया है। तृतीय खंड में द्वादश अध्याय में शोध-विषय का सार दिया गया है। चतुर्थ खंड में लाल के नाटकों की सूची तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सामान्य है। मात्रा तथा विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण धूमिल-सा है तथा जिल्दबंदी सामान्य है।

8. शोधार्थी - गुप्ता, सुलभ

शोध-विषय - जयशंकर प्रसाद के नाटकों में ऐतिहासिकता

विश्वविद्यालय - जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

निर्देशक - प्राणनाथ

वर्ष - 1992

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - बहुत प्रयास करने पर भी उपर्युक्त शोध-प्रबंध पुस्कालय में नहीं मिला।

9. शोधार्थी - गुलाटी, सुमन

शोध-विषय - स्वातंत्र्योत्तर नाटकों में नारी स्वातंत्र्य चेतना

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - गोयल, जयभगवान

वर्ष - 1992

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **11** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **405** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नारी स्वातंत्र्य चेतना का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में नारी स्वातंत्र्य चेतना के परिप्रेक्ष्य में स्वातंत्र्योत्तर नाटकों का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में राकेश पूर्व नाटकों के परिप्रेक्ष्य में नारी स्वातंत्र्य चेतना का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में राकेशकालीन नाटककारों के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में नारी स्वातंत्र्य चेतना का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में मोहन राकेश के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में नारी स्वातंत्र्य चेतना का चित्रण किया गया है। षष्ठ अध्याय में लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में नारी स्वातंत्र्य चेतना का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में विष्णु प्रभाकर के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में, अष्टम अध्याय में मन्नू भण्डारी के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में, नवम अध्याय में सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में तथा दशम अध्याय में रमेश बक्षी के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में नारी स्वातंत्र्य चेतना का अध्ययन किया गया है। एकादश अध्याय में समकालीन अन्य नाटकों में नारी स्वातंत्र्य चेतना का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सजग नहीं रही है। प्रबंध-टंकण अस्पष्ट है तथा जिल्दबंदी सामान्य है।

10. शोधार्थी - बाला, रेणु

शोध-विषय - महाभारत पर आधारित शंकर शेष के नाटक

विश्वविद्यालय - जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

निर्देशक - सराफ़, नीलम

वर्ष - 1992

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - बहुत प्रयास करने पर भी उपर्युक्त शोध-प्रबंध पुस्कालय में नहीं मिला।

11. शोधार्थी - मोहन, विजय

शोध-विषय - रंगशिल्प की दृष्टि से लक्ष्मीनारायण लाल का नाट्य साहित्य

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - मेंहदीरत्ता, वीरेन्द्र

वर्ष - 1992

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **4** खंडों के अंतर्गत **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **320** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **2** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में रंग-शिल्प का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय खंड में **5** अध्याय हैं। तृतीय अध्याय में लक्ष्मीनारायण लाल के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों के संदर्भ में पात्र और परिवेश का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों का अभिनय पक्ष और सफलता की दृष्टि से अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में नाट्य-भाषा और संवाद-योजना का विवेचन किया गया है। सप्तम अध्याय में रंग-चेतना और संगीत के प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। तृतीय खंड में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। चतुर्थ खंड में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ व्यतिक्रम में है। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा, विराम चिह्न तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य सामान्य स्तर का है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

12 . शोधार्थी - रीटा

शोध-विषय - मोहन राकेश और सुरेन्द वर्मा के नाटकों में पात्र-सृष्टि ः एक तुलनात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - गुलाटी, यश

वर्ष - 1992

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **3** खंडों के अंतर्गत **9** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **530** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **3** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में नाटक और पात्र-सृष्टि का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय खंड में **6** अध्याय हैं। चतुर्थ अध्याय में मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों के संदर्भ में पु ष-पात्रों का परिचय दिया गया है। पंचम अध्याय में मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों के संदर्भ में नारी-पात्रों का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित दिशाहिन पात्रों का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों के संदर्भ में अन्य पु ष-पात्रों का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों के संदर्भ में अन्य स्त्री-पात्रों का अध्ययन किया गया है। नवम अध्याय में मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों के आधार पर पात्र-सृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। तृतीय खंड में शोध-विषय का सार दिया गया है। चतुर्थ खंड में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नहीं दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां हैं। प्रबंध-टंकण धूमिल-सा है तथा जिल्दबंदी सामान्य स्तर की है।

13. शोधार्थी - सुडान, सीमा

शोध-विषय - डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों में नारी-स्वतंत्रता

विश्वविद्यालय - जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

निर्देशक - गुप्त, ओम प्रकाश

वर्ष - 1992

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - बहुत प्रयास करने पर भी उपर्युक्त शोध-प्रबंध पुस्कालय में नहीं मिला।

14. शोधार्थी - किरण, शशि

शोध-विषय - कथ्य और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से उपेन्द्रनाथ 'अश्क' और जगदीश चन्द्र माथुर के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - यादव, शकुंतला

वर्ष - 1993

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **4** खंडों के अंतर्गत **9** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **282** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **3** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में उपेन्द्रनाथ 'अश्क' और जगदीश चन्द्र माथुर के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में नाटक और कथ्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय खंड में **5** अध्याय हैं।

चतुर्थ अध्याय में कथ्य के आधार पर अश्क के नाटकों का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में कथ्य के आधार पर माथुर के नाटकों का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में चरित्र-चित्रण के आधार पर अश्क के नाटकों का मूल्यांकन किया गया है। सप्तम अध्याय में चरित्र-चित्रण के आधार पर माथुर के नाटकों का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में अश्क और माथुर के नाटकों में कथ्य और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से समानता-असमानता का विश्लेषण किया गया है। तृतीय खंड में नवम अध्याय में शोध-विषय का सार दिया गया है। चतुर्थ खंड में सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क नहीं रहा है। प्रबंध-टंकण सामान्य है तथा जिल्दबंदी ठीक है।

15. शोधार्थी - कुमार, प्रवीण

शोध-विषय - हिन्दी के नाटकों में सामाजिक संबंधों में विघटन ः सन् **1950** से **1987** तक

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - निर्मम, हेमराज

वर्ष - 1993

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **245** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में तद्युगीन परिस्थितियों का अध्ययन किया गया है। द्वितीय अध्याय में सामाजिक संबंधों और विघटन का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में हिन्दी नाटकों का सर्वेक्षण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में हिन्दी नाटकों में सामाजिक संबंधों में विघटन के परिप्रेक्ष्य में पारिवारिक एवं दाम्पत्य परिस्थितियों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में आर्थिक परिस्थितियों का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में सांस्कृतिक परिस्थितियों का

चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय में राजनीतिक परिस्थितियों का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत अनुपस्थित हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। मात्रा व विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उत्तम है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

16. शोधार्थी - कुमार, शब्द

शोध-विषय - प्रसादोत्तर जीवन-चरित मूलक नाटकों में भारतीय संस्कृति के विविध आयाम (केवल प्रमुख नाटक)

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - शर्मा, ब्रजमोहन

वर्ष - 1993

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **11** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **313** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय मे भारतीय संस्कृति का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में भारतीय संस्कृति के प्रमुख तत्त्व और प्रवृतियों का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में स्वरूप, प्रवृतियां और विकास के परिप्रेक्ष्य में जीवनचरित मूलक हिन्दी नाटकों को विश्लेषित किया गया है। चतुर्थ अध्याय में प्रसादोत्तर जीवनचरित मूलक हिन्दी नाटकों में आर्थिक आयाम का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में ऐतिहासिक आयामों का मूल्यांकन किया गया है। षष्ठ अध्याय में दार्शनिक आयामों का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में धार्मिक आयामों का उल्लेख किया गया है। अष्टम अध्याय में नैतिक आयामों का अध्ययन किया गया है। नवम अध्याय में राजनीतिक और राजप्रशासनिक आयामों का विवेचन किया गया है। दशम अध्याय

में अन्य सांस्कृतिक आयाम दिए गए हैं। एकादश अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। अध्यायीकरण में अध्यायों के समक्ष पृष्ठांकन नहीं किया गया है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा प्रभावशाली है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

17. शोधार्थी - कुमार, सुरेश

शोध-विषय - पंजाब-मूल के हिन्दी नाट्यकारों के नाटकों में मध्यवर्गीय चेतना

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - चावला, पी.एल.

वर्ष - 1993

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **407** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में समाज और मध्यवर्ग का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हिन्दी नाटक के विभिन्न वर्ग और उनकी भूमि के अध्ययन के साथ, हिन्दी और पंजाबी नाट्य साहित्य का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में पंजाब मूल के नाटककारों के जीवन और व्यक्तित्व का परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में पंजाब मूल के नाटककारों के नाटकों में आर्थिक पक्ष और मध्यवर्गीय चेतना का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में मध्यवर्गीय चेतना के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक पक्ष का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में राजनीतिक पक्ष का चित्रण किया है। सप्तम अध्याय में यौन-मनोविश्लेषण का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में एकांकियों में मध्यवर्गीय चेतना का विवेचन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची सही है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत उपलब्ध नहीं होते। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा तथा विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क नहीं रहा है। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

18. शोधार्थी - केशव, विश्व रमन

शोध-विषय - मोहन राकेश के नाटकों में स्त्री-पु ष संबंध

विश्वविद्यालय - जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

निर्देशक - गुप्त, ओम प्रकाश

वर्ष - 1993

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - बहुत प्रयास करने पर भी उपर्युक्त शोध-प्रबंध पुस्कालय में नहीं मिला।

19. शोधार्थी - कौर, दलजीत

शोध-विषय - मोहन राकेश के नाट्य साहित्य में अभिनय-कला और संवाद-शिल्प

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - मलिक, भीमसिंह

वर्ष - 1993

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **245** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में समकालीन हिन्दी नाटक और मोहन राकेश के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में मोहन राकेश के नाट्य-सृष्टि का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में अभिनय-कला और संवाद-शिल्प का तात्त्विक विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में मोहन राकेश के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में अभिनय-कला का विश्लेषण किया गया है।

पंचम अध्याय में संवाद-शिल्प का चित्रण किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम शीर्षक के नीचे मध्य में दिए गए हैं। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सजग रही है। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

20. शोधार्थी - जैन, सारिका

शोध-विषय - साठोत्तरी प्रमुख हिन्दी नाटकों में नैतिक मूल्य

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - लाम्बा, शान्ता

वर्ष - 1993

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **421** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नैतिक मूल्यों का सैद्धान्तिक किया गया है। द्वितीय अध्याय में स्वतन्त्रता पूर्व साहित्य में नैतिक मूल्यों के विकासक्रम का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में नैतिक मूल्यों के संदर्भ में साठोत्तरी पूर्व नाटकों का मूल्यांकन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में साठोत्तरी प्रमुख हिन्दी नाटको में सामाजिकता के संदर्भ में नैतिक मूल्यों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में राजनीतिक संदर्भ में नैतिक मूल्यों की दुर्दशा का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में संस्कृति के बदलते नैतिक नियमों का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में आर्थिक संदर्भ में समाप्त होते नैतिक मूल्यों का चित्रण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में

शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य अस्पष्ट है तथा जिल्दबंदी ठीक है।

21. शोधार्थी - बड़थ्वाल, विजय मोहन

शोध-विषय - समकालीन हिन्दी नाटक ः रंग-शिल्प

(1965 से 1985 तक)

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - लाम्बा, शान्ता

वर्ष - 1993

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **4** खण्डों के अंतर्गत **16** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **298** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **1** अध्याय है। प्रथम अध्याय में रंगशिल्प का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय खंड में **7** अध्याय हैं। द्वितीय अध्याय में निर्देशक, रंग-निर्देश आदि का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में अभिनेता का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में रंग-स्थली का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में दृश्य-बंध का उल्लेख किया गया है। षष्ठ अध्याय में भाषा एवं संवादीय रचना का विवरण दिया गया है। सप्तम अध्याय में वैशभूषा का परिचय दिया गया है। अष्टम अध्याय में रंग-दीपन एवं ध्वनि संयोजन का अध्ययन किया गया है। तृतीय खंड में **6** अध्याय हैं। नवम अध्याय में लोकमंच परम्परा का विवेचन किया गया है। दशम अध्याय में प्राचीन भारतीय रंगमंच-परम्परा का चित्रण किया गया है। एकादश अध्याय में पारसी-हिन्दी रंगमंच का विश्लेषण किया गया है। द्वादश अध्याय में पाश्चात्य-रंगमंच परम्परा का अध्ययन किया गया है। त्रयोदशी अध्याय में उन्नीसवीं सदी के रंगमंचवाद विशेषण की शैलियों का अध्ययन किया गया है। चतुर्दश अध्याय में आधुनिक हिन्दी रंगमंच का विवेचन किया गया है। चतुर्थ खंड में **2** अध्याय हैं। पंचदश अध्याय में यथार्थवादी नाटकों में रंगशिल्प की चर्चा की गई है। षोडश अध्याय में प्रतीकवादी नाटकों के संदर्भ में रंगशिल्प का

अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य अस्पष्ट है तथा जिल्दबंदी सामान्य है।

22. शोधार्थी - लाल, तरसेम

शोध-विषय - भीष्म साहनी के नाटक साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - मेंहदीरत्ता, वीरेन्द

वर्ष - 1993

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत शोध-प्रबंध **4** खंडों के अंतर्गत **9** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **435** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **3** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में नाटक साहित्य को विश्लेषित किया गया है। तृतीय अध्याय में भीष्म साहनी के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय खंड में **5** अध्याय हैं। चतुर्थ अध्याय में भीष्म साहनी के नाटक साहित्य के परिप्रेक्ष्य में कथानक का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में पात्र-सृष्टि और चरित्र-चित्रण का उल्लेख किया गया है। षष्ठ अध्याय में नाट्य-भाषा का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में नाटकीय तनाव का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में रंग-शिल्प का चित्रण किया गया है। तृतीय खंड में नवम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। चतुर्थ खंड में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चिततक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का

निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत अल्प हैं। प्रबंध की भाषा अस्पष्ट है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण साधारण स्तर का है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

23. शोधार्थी - वर्मा, मीनाक्षी

शोध-विषय - समकालीन नाटकों में नारी स्वातंत्र्य और उससे उपजे तनाव

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - मेंहदीरत्ता, वीरेन्द

वर्ष - 1993

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **4** खण्डों के अंतर्गत **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **302** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **2** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में नारी स्वातंत्र्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय खंड में **4** अध्याय हैं। तृतीय अध्याय में समकालीन नाटकों के परिप्रेक्ष्य में नारी स्वातंत्र्य के नए आयामों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में समकालीन नाटकों के परिप्रेक्ष्य में नारी-शिक्षा तथा आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं अधिकारों को विश्लेषित किया गया है। पंचम अध्याय में समकालीन नाटकों के परिप्रेक्ष्य में नर-नारी संबंधों के बदलते दायरों का चित्रण किया गया है। षष्ठ अध्याय में युगीन परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में नारी एवं तनाव का अध्ययन किया गया है। तृतीय खंड में सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। चतुर्थ खंड में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा

सरल, शैली प्रवाहपूर्ण है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

24. शोधार्थी - शर्मा, क ष्णा

शोध-विषय - लक्ष्मीनारायण लाल के नाटक साहित्य में व्यक्त उनकी सामाजिक दृष्टि

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - राय, लल्लन

वर्ष - 1993

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **345** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में सामाजिक दृष्टि का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में लक्ष्मीनारायण लाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में प्रमुख सामाजिक समस्याओं का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में आधुनिक भावबोध का चित्रण किया गया है। पंचम अध्याय में विभिन्न सामाजिक-राजनैतिक समस्याओं के आधार पर लाल की सामाजिक दृष्टि का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम व्यतिक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक व उपशीर्षक दिए गए हैं। उपसंहार में शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध-टंकण ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

25. शोधार्थी - शर्मा, शुषमा

शोध-विषय - नाट्य-भाषा का संकेतार्थ वैज्ञानिक अध्ययन ः सिद्धांत और अनुप्रयोग

(रमेश बक्षी के नाटकों के संदर्भ में)

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - पाण्डेय, शशिभूषण 'शीतांशु'

वर्ष - 1993

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **9** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **534** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नाट्य-भाषा का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में संकेत-विज्ञान का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में नाट्य-भाषा विश्लेषण के विभिन्न संकेतार्थ वैज्ञानिक प्रतिमानों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में 'देवयानी का कहना है' की नाट्य-भाषा का संकेतार्थ वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में 'तीसरा रथी' की नाट्य-भाषा का संकेतार्थ वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में 'वामाचार' तथा सप्तम अध्याय में 'कसे हुए तार' की नाट्य-भाषा का संकेतार्थ वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। नवम अध्याय में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम शीर्षक के नीचे निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण सही हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक दिए गए हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। संदर्भ-सूची पुस्तकानुक्रम में है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उच्च स्तर का है तथा जिल्दबंदी ठीक है।

26. शोधार्थी - आराधना

शोध-विषय - नाट्य-शिल्प की दृष्टि से सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - मेंहदीरत्ता, वीरेन्द

वर्ष - 1994

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **4** खण्डों के अंतर्गत **9** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **318** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **3** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में सुरेन्द्र वर्मा के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं तद्युगीन परिवेश का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में नाट्य-शिल्प का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय खंड में **5** अध्याय हैं। चतुर्थ अध्याय में सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में वस्तु-विधान का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में नाटकीय तनाव का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में पात्र-सृष्टि का विश्लेषण किया गया है। सप्तम अध्याय में सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में नाट्य-भाषा का चित्रण किया गया है। अष्टम अध्याय में सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में रंगमंचीय दृष्टि का उल्लेख किया गया है। तृतीय खंड में नवम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। चतुर्थ खंड में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण ठीक हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नही हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी सामान्य हैं।

27. शोधार्थी - कुमारी, मंजु

शोध-विषय - डॉ. रामकुमार वर्मा के ऐतिहासिक नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - अग्रवाल, महीपाल

वर्ष - 1994

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध 8 अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल 400 पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में ऐतिहासिक नाटकों का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में वर्मा के ऐतिहासिक नाटकों के परिप्रेक्ष्य में कथानक का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में पात्र और चरित्र-चित्रण का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में संवाद का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में दृश्य और शिल्प-विधान का चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय में भाव, रस और उद्देश्य का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम व्यतिक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत उपलब्ध नहीं होते। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

28. शोधार्थी - कौर, सरबजीत

शोध-विषय - स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी नाटकों में बदलते हुए काम-संबंध

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - लाम्बा, शान्ता

वर्ष - 1994

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **290** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में काम का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में काम का मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक तथा जैविक दृष्टि से विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में हिन्दी नाटकों के परिप्रेक्ष्य में काम-संबंधों का सर्वेक्षण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में मोहन राकेश और राकेशकालीन नाटकों के परिप्रेक्ष्य में स्त्री-पु ष काम-संबंधों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में राकेशोत्तर हिन्दी नाटकों के परिप्रेक्ष्य में स्त्री-पु ष काम-संबंधों का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। मात्रा तथा विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध का टंकण कार्य ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

29. शोधार्थी - ठाकुर, अनीता

शोध-विषय - नाटकीय तनाव की दृष्टि से मोहन राकेश तथा सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों का अध्ययन

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - मेंहदीरत्ता, वीरेन्द

वर्ष - 1994

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **4** खंडों के अंतर्गत **9** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **264** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **3** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में मोहन राकेश

तथा सुरेन्द्र वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में नाट्कीय तनाव का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय खंड में **5** अध्याय हैं। चतुर्थ अध्याय में मोहन राकेश तथा सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों की कथावस्तु के परिप्रेक्ष्य में संघर्ष एवं शैल्पिक धरातल पर विनिर्मित तनाव का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में कौतूहल, आकस्मिकता, रहस्यात्मकता, नाट्य-भ्रान्ति द्वारा उत्पन्न तनाव का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में मोहन राकेश तथा सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों में द्वंद्व, अन्तःसंघर्ष एवं अलगाव से व्युत्पन्न तनाव का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में व्यंग्य एवं नाटकीय विडम्बना के धरातल पर विनिर्मित तनाव का विवेचन किया गया है। अष्टम अध्याय में संवादीय धरातल पर काव्यात्मक भाषा, लय, प्रवेग, मौन व विराम द्वारा व्युत्पन्न तनाव का अध्ययन किया गया है। तृतीय खंड में नवम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। चतुर्थ खंड में समीक्षित नाटक तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत अल्प हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सामान्य है।

30. शोधार्थी - दुग्गल, भारती

शोध-विषय - लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों में अंतर-पाठीयता

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - पाण्डेय, शशिभूषण 'शीतांशु'

वर्ष - 1994

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **386** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में लक्ष्मीनारायण लाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ, अंतर-पाठीयता का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में लाल के प्रथम चरण के नाटकों के संदर्भ

में अंतर-पाठीयता का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में लाल के द्वितीय चरण के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में अंतर-पाठीयता का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में लाल के तृतीय चरण के नाटकों के संदर्भ में अंतर-पाठीयता का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में लाल के चतुर्थ चरण के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में अंतर-पाठीयता का चित्रण किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। सप्तम अध्याय में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची ठीक है तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा संयत है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

31. शोधार्थी - महाजन, अनीता

शोध-विषय - 'शंकर शेष' के नाटकों का नाट्य-शिल्प की दृष्टि से अध्ययन

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - मेंहदीरत्ता, वीरेन्द

वर्ष - 1994

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **4** खंडों के अंतर्गत **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **313** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **3** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में 'शंकर शेष' के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में नाट्यालेख एवं रंग-शिल्प का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय खंड में **4** अध्याय हैं। चतुर्थ अध्याय में 'शंकर शेष' के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में वस्तु-विधान का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में पात्र-योजना का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में नाट्य-भाषा तथा नाटकीय तनाव का विश्लेषण किया गया है। सप्तम अध्याय में रंगशिल्प के संदर्भ में 'शंकर शेष' के नाटकों का चित्रण किया गया है।

तृतीय खंड में अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। चतुर्थ खंड में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी सामान्य स्तर के हैं।

32. शोधार्थी - सुरेश

शोध-विषय - अभिनेयता के निकष पर डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों का मूल्यांकन

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - मिश्र, नरेश

वर्ष - 1994

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **400** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में अभिनेयता का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में लाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में लाल के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में कथावस्तु संयोजन का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में पात्र-योजना का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में संवाद का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में रंग-निर्देश का चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय में नाट्य-भाषा का उल्लेख किया गया है। अष्टम अध्याय में कथ्य का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत अनुपस्थित हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा व विराम-चिह्नों की अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क नहीं रहा है। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी उत्तम कोटि के हैं।

33. **शोधार्थी -** काला, मीनाक्षी

शोध-विषय - नाट्य-प्रणेता, नाट्य-चिंतक और रंगपरिकल्पक जगदीश चन्द्र माथुर

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - अवस्थी, ओम्

वर्ष - 1995

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **3** खंडों के अंतर्गत **11** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **310** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **5** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में जगदीश चन्द्र माथुर के व्यक्तित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में इनकी नाट्य-सृजन की विकास-यात्रा का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में इनके नाटकों की अन्तर्वस्तु का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में इनकी जीवन-दृष्टि के वैचारिक स्रोतों का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में इनके नाटकों की शैल्पिक संरचना का चित्रण किया गया है। द्वितीय खंड में **3** अध्याय हैं। षष्ठ अध्याय में इनके नाट्य-समालोचना का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में इनके गवेषनात्मक नाट्य-चिंतन का उल्लेख किया गया है। अष्टम अध्याय में व्यावहारिक नाट्य-चिंतन का अध्ययन किया गया है। तृतीय खंड में **3** अध्याय हैं। नवम अध्याय में इनके नाटकों के परिप्रेक्ष्य में रंगपरिकल्पना के सैद्धान्तिक धरातल का विश्लेषण किया गया है। दशम अध्याय में राष्ट्रीय धरातल का चित्रण किया गया है। एकादश अध्याय में सर्जनात्मक धरातल का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची सही है। अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत है। अध्यायीकरण में अध्यायों के समक्ष पृष्ठांकन नहीं किया गया है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा-शैली स्पष्ट है। मात्रात्मक अशुद्धियां कम हैं। टंकण धूमिल एवं जिल्दबंदी मजबूत हैं।

34. शोधार्थी - गुप्ता, देवेन्द्र कुमार

शोध-विषय - हिन्दी नाट्य शिल्प ः बदलती रंग-दृष्टि

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - सारस्वत, ओमप्रकाश

वर्ष - 1995

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **285** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नाट्य-शिल्प का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में भारतेन्दु युग के परिप्रेक्ष्य में नाट्य-शिल्प का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में प्रसाद युग के संदर्भ में नाट्य-शिल्प का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में प्रसादोत्तरयुग के परिप्रेक्ष्य में यथार्थ के प्रति रूझान का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में हिन्दी नाटकों के परिप्रेक्ष्य में निजी मुहावरों की तलाश का चित्रण किया गया है। षष्ठ अध्याय में हिन्दी नाट्य प्रवृतियों और रंग विधान के बदलते रूप का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। भाषागत व वर्तनी संबंधी अशुद्धियां हैं। प्रबंध का टंकण तथा जिल्दबंदी सामान्य हैं।

35. शोधार्थी - जैन, विनोद

शोध-विषय - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी महिला नाटककारों के नाटकों में सामाजिक चेतना

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - वियोगी, लीलाधर

वर्ष - 1995

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **310** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में सामाजिक चेतना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर परिस्थितियों और परिवेश का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी महिला नाटककारों के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक चेतना का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में हिन्दी महिला एकांकीकारों की एकांकियों के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक चेतना का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में सामाजिक चेतना के परिप्रेक्ष्य में नाटककारों के नाट्य-रूपान्तरण का चित्रण किया गया है। षष्ठ अध्याय में नाटककारों की चेतना के विभिन्न आयामों का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक नहीं दिए गए हैं। शोध-संकेत उपलब्ध नहीं होते। प्रबंध की भाषा संयत तथा स्पष्ट है। वर्तनी तथा मात्रा संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध का टंकण तथा जिल्दबंदी सामान्य हैं।

36. शोधार्थी - तोमर, तेजराम

शोध-विषय - प्रसाद के नाटकों में संघर्ष

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - गुप्ता, आनन्द कुमार

वर्ष - 1995

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **356** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में प्रसाद के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में जीवन, साहित्य और संघर्ष का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में प्रसाद के नाटकों के संदर्भ में सामाजिक संघर्ष का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में

राजनीतिक संघर्ष का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में धार्मिक संघर्ष का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में ऐतिहासिक संघर्ष का चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय में मनोवैज्ञानिक संघर्ष का उल्लेख किया गया है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा पृष्ठांकन ठीक हैं। अध्याय व्यवस्थित है। पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सुगम है। परिशिष्ट में आकारादि नियम का पालन नहीं किया गया है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सजग रहा है। टंकण-कार्य उत्तम तथा सुपाठ्य है, जिल्दबंदी अच्छी है।

37. शोधार्थी - निकाराम

शोध-विषय - हिन्दी गीतिनाटक ः स्रोत और समकालीन प्रासंगिकता

(सन् 1960 से 1980 तक)

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - भल्ला, सरस्वती

वर्ष - 1995

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध 7 अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल 287 पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हिन्दी गीतिनाटक का सैद्धान्तिक परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में स्रोत और समकालीन प्रासंगिकता का तात्त्विक विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में 1960 से 1980 तक के हिन्दी गीतिनाटकों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में हिन्दी गीतिनाटकों के परिप्रेक्ष्य में प्रेरणा-स्रोतों का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में हिन्द-गीतिनाटकों के परिप्रेक्ष्य में समकालीन प्रासंगिकता का विवेचन किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रात्मक त्रुटियां व वर्तनी के प्रयोग की अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध-टंकण अस्पष्ट है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

38. शोधार्थी - रानी, आशा

शोध-विषय - नाटक और नैतिकता ः रमेश बक्षी के नाटकों के संदर्भ

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - अवस्थी, ओम्

वर्ष - 1995

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **354** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में बक्षी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ, नैतिकता का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में नाटक के संदर्भ में नैतिकता का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में बक्षी के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में नैतिक संरचना का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में नैतिक विचलन के आधार-प्रत्ययों का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में नैतिक कर्म के प्रतिमानों का चित्रण किया गया है। षष्ठ अध्याय में नैतिकता के निर्धारक तत्त्वों का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में नैतिकता के विभिन्न रूपों का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में अभिव्यक्ति और प्रस्तुति की नैतिकता का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण ठीक हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अनुच्छेदों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। संदर्भ -सूचि पुस्तकानुक्रम में है। प्रबंध की भाषा स्पष्ट, शैली प्रवाहपूर्ण है। अशुद्धियां अल्प हैं एवं टंकण अच्छा है। जिल्दबंदी सशक्त है।

39. शोधार्थी - वशिष्ट, शनि

शोध-विषय - समकालीन प्रमुख हिन्दी नाटकों में वैचारिकता के नए स्वर

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - शर्मा, ब्रजमोहन

वर्ष - 1995

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **468** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में वैचारिकता का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में समकालीन नाटकों में सामाजिक वैचारिकता का विश्लेषण किया गया है। तृतीय अध्याय में समकालीन नाटकों में राजनीतिक वैचारिकता का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में समकालीन नाटकों में आर्थिक वैचारिकता को विश्लेषित किया गया है। पंचम अध्याय में समकालीन नाटकों में धार्मिक वैचारिकता का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में बौद्धिक वैचारिकता का चित्रण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां रह गई हैं। प्रबंध का टंकण सामान्य स्तर का है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

40. शोधार्थी - सुन्दरी, श्याम

शोध-विषय - नौवें दशक का हिन्दी नाटक ः मिथकीय आयाम

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - सिंह, पुष्पपाल

वर्ष - 1995

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **262** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में मिथक का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में आधुनिक साहित्य में मिथक की व्यापकता का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में नौंवे दशक के मिथकीय नाटकों का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में विवेच्य नाटकों के परिप्रेक्ष्य में युग-जीवन की अभिव्यक्ति प्रकट की गई है। षष्ठ अध्याय में नूतन उद्भावनाओ के संदर्भ में नौंवे दशक के हिन्दी नाटकों का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध का टंकण कार्य ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

41. शोधार्थी - कौर, जतिन्दर

शोध-विषय - हिन्दी के प्रमुख साठोत्तरी नाटकों में नारी का बदलता रूप

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - लाम्बा, शान्ता

वर्ष - 1996

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **217** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नारी और उसके बदलते स्वरूप का अध्ययन किया है। द्वितीय अध्याय में साठोत्तरी नाटकों के परिप्रेक्ष्य में नारी-परम्परा और उसके बदलते रूप का विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में नारी के बदलते रूप को प्रभावित करने वाले तत्त्वों का परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में नारी के बदलते रूप का वर्गीकरण किया गया है। पंचम अध्याय में

शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन सही है। पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक की संरचना की गई है। शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा सरल, शैली सुगठित है। मात्रा एवं विराम चिह्नों का शुद्ध प्रयोग दृष्टिगत होता है। प्रबंध का टंकण एवं जिल्दबंदी उत्तम हैं।

42. शोधार्थी - ढाका, बिमला

शोध-विषय - मोहन राकेश के नाटकों में अन्तर्द्वन्द्व के आयाम

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - सिंहल, बैजनाथ

वर्ष - 1996

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **262** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में मोहन राकेश के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में अन्तर्द्वन्द्व का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में मोहन राकेश के नाटकों के संदर्भ में वैयक्तिक अन्तर्द्वन्द्व का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में पारिवारिक अन्तर्द्वन्द्व का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में सामाजिक अन्तर्द्वन्द्व का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में सांस्कृतिक अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय में स्थित्यात्मक अन्तर्द्वन्द्व का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची एवं अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत मिलते हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। विराम चिह्नों की त्रुटियां रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उच्च स्तरीय है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

43. शोधार्थी - बाला, अरविंद

शोध-विषय - मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों में प्रयोगशीलता ः एक तुलनात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - यादव, शकुंतला

वर्ष - 1996

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **2** खंडों के अंतर्गत **10** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **323** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **3** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में प्रयोगशीलता का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय खंड में **7** अध्याय हैं। चतुर्थ अध्याय में मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों की भाषिक चेतना का प्रयोगशीलता की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में चारित्रिक सृष्टि से तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में कथ्य-संवेदना का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में मंच-सज्जा एवं संयंत्रों के कलात्मक प्रयोग का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में रंग-संकेत और कार्य-व्यापार का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। नवम अध्याय में मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों में परम्परा एवं प्रयोग का अद्भुत समन्वय का अध्ययन किया गया है। दशम अध्याय में शोध-विषय का सार तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण सामान्य है तथा जिल्दबंदी ठीक है।

44. शोधार्थी - राजकुमारी

शोध-विषय - सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों में नारी-संवेदना

विश्वविद्यालय - जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

निर्देशक - शर्मा, प्रमेश्वरी

वर्ष - 1996

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - बहुत प्रयास करने पर भी उपर्युक्त शोध-प्रबंध पुस्कालय में नहीं मिला।

45. शोधार्थी - शर्मा, केवल कृष्ण

शोध-विषय - धर्मवीर भारती के काव्य-नाटकों में नाट्य-तत्त्व

विश्वविद्यालय - जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

निर्देशक - राजकुमार

वर्ष - 1996

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - बहुत प्रयास करने पर भी उपर्युक्त शोध-प्रबंध पुस्कालय में नहीं मिला।

46. शोधार्थी - शर्मा, निधि

शोध-विषय - साठोत्तरी हिन्दी नाटकों **(1961-1990)** का प्रवृतिमूलक अध्ययन

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - अवस्थी, ओम्

वर्ष - 1996

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **9** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **686** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में प्रवृतिमूलक अध्ययन का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में साठ पूर्व के हिन्दी नाटकों की प्रवतिमूलकता का विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में साठोत्तरी नाट्यान्दोलन और नव्य नाट्य-प्रवृतियों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में साठोत्तरी समाज-सांस्कृतिक नाट्य-प्रवृतियों का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में प्रतीकमुखी वास्तविकतावादी नाट्य-प्रवृतियों का चित्रण किया गया है। षष्ठ अध्याय में

विसंगतिमूलक नाट्य-प्रवृतियों का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में नूतन प्रयोगप्रधान नाट्य-प्रवृतियों का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में नुक्कड़ नाट्य-प्रवृतियों का उल्लेख किया गया है। नवम अध्याय में नाट्य-प्रवृतियों का महत्त्वांकन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। संदर्भ-सूची लेखक नामानुक्रम में है। मात्रा, विराम चिह्न व वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध का टंकण तथा जिल्दबंदी उत्तम हैं।

47. शोधार्थी - शर्मा, मोनिका

शोध-विषय - साठोत्तरी प्रमुख नाटकों में परिवेशजन्य तनाव

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - लाम्बा, शान्ता

वर्ष - 1996

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत शोध-प्रबंध 7 अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल 149 पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नाटकीय तनाव का सैद्धान्तिक विवेचन के साथ, नारी-स्वतंत्रता के संबंध में तनाव के मूल कारण का अध्ययन किया गया है। द्वितीय अध्याय में परिवर्तित जीवन-मूल्यों से उत्पन्न तनाव के संदर्भ में साठोत्तरी नाटकों को विश्लेषित किया गया है। तृतीय अध्याय में स्त्री-पु ष संबंधों के तनाव का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में खण्डित व्यक्तित्व और पारिवारिक विघटन से उत्पन्न तनाव का चित्रण किया गया है। पंचम अध्याय में व्यंग्य और विसंगतिबोध जनित तनाव का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में सत्ता और जन-सामान्य में तनाव का विवेचन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक सही है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

48. शोधार्थी - शर्मा, श्रवण कुमार

शोध-विषय - समकालीन नाट्य आलोचना ः रंग-सृष्टि चिंतन के परिप्रेक्ष्य में

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - कांत, सतीश

वर्ष - 1996

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **3** खंडों के अंतर्गत **3** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **296** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **3** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में समकालीन नाट्य चिंतन का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में रचनानिजत्व को विश्लेषित किया गया है। तृतीय अध्याय में आलोचनात्मक रंग-सृष्टि अन्वेषण के अध्ययन के साथ-साथ, अध्ययन से निसृत तत्त्वों एवं तथ्यों का भी विवेचन किया गया है। द्वितीय खंड में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। तृतीय खंड में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा अस्पष्ट है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क नहीं रहा है। प्रबंध-टंकण धूमिल-सा है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

49. शोधार्थी - कुमार, संजीव

शोध-विषय - साठोत्तर हिन्दी नाटक ः शिल्पगत विविध प्रयोग

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - गुप्त, लालचंद 'मंगल'

वर्ष - 1997

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **395** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में साठोत्तर हिन्दी नाटकों का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में साठोत्तर हिन्दी नाटककारों की प्रयोगधर्मिता के प्रेरक परिवेश का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में साठोत्तर हिन्दी नाटकों के संदर्भ में वस्तुगत विविध प्रयोगों का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में भाषागत विविध प्रयोगों का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में शैलीगत विविध प्रयोगों का चित्रण किया गया है। षष्ठ अध्याय में रंगमंचीय विविध प्रयोगों का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-नियमों के अनुरूप है। विषय-सूची व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा, विराम चिह्न व वर्तनी संबंधी अशुद्धियां रह गई हैं। प्रबंध-टंकण ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

50. शोधार्थी - बग्वलू, वनिता

शोध-विषय - साहित्य के संदर्भ में नैतिकता का प्रश्न और हिन्दी नाटक

विश्वविद्यालय - जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

निर्देशक - त्रिछल, पी. एन.

वर्ष - 1997

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **149** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नैतिकता का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में व्यक्तिगत संदर्भ में नैतिकता का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में हिन्दी नाटक का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में हिन्दी नाटकों के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक नैतिकता का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में धार्मिक नैतिकता का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में अर्थगत नैतिकता का चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय में राष्ट्रगत नैतिकता का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम मध्य भाग में नहीं हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। संदर्भ-सूची लेखक नामानुक्रम में है। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रा व विराम चिह्नों की अशुद्धियां हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी मध्यम स्तर के हैं।

51. शोधार्थी - बहल, सुनील

शोध-विषय - गुप्तकालीन आभिजत्य के संदर्भ में कालिदास तथा जयशंकर प्रसाद का नाटक साहित्य

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - शर्मा, लक्ष्मीनारायण

वर्ष - 1997

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **322** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में आभिजात्य और नाटक का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय

अध्याय में गुप्तकालीन सभ्यता एवं संस्कृति के संदर्भ में अभिजात वर्ग का विश्लेषण किया गया है। तृतीय अध्याय में कालिदास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में जयशंकर प्रसाद के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में गुप्तकालीन आभिजात्य के संदर्भ में कालिदास के नाटकों का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में गुप्तकालीन आभिजात्य के संदर्भ में जयशंकर प्रसाद के नाटक साहित्य का विश्लेषण किया गया है। सप्तम अध्याय में गुप्तकालीन आभिजात्य के संदर्भ में कालिदास तथा जयशंकर प्रसाद के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, चित्रावली, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

52. शोधार्थी - बाला, रजनी

शोध-विषय - रामकुमार वर्मा के एकांकी साहित्य का ऐतिहासिक-पौराणिक आधार

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - शर्मा, लक्ष्मीनारायण

वर्ष - 1997

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **342** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में एकांकी के वर्णन के साथ-साथ, इतिहास, पुराण और संस्कृति का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में रामकुमार वर्मा के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं तदयुगीन परिवेश का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में रामकुमार वर्मा के एकांकी साहित्य का परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में रामकुमार वर्मा के एकांकी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में

ऐतिहासिक आधारों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में रामकुमार वर्मा के एकांकी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में पौराणिक आधारों का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम यथानियम हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां ठीक हैं। अध्यायों में उपशीर्षकों की संरचना की गई है। शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सुन्दर तथा सुपाठ्य है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

53. शोधार्थी - रानी, रेखा

शोध-विषय - डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों में व्यक्त जीवन-दर्शन

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - गुप्त, रमेश

वर्ष - 1997

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **9** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **272** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में लाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में जीवन-दर्शन का तात्त्विक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में लाल के नाटकों में व्यक्त जीवन-दर्शन के संदर्भ में सामाजिक दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में धार्मिक दृष्टिकोण का उल्लेख किया गया है। पंचम अध्याय में राजनीतिक दृष्टिकोण का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में साहित्यिक दृष्टिकोण का चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय में कलात्मक दृष्टिकोण का उल्लेख किया गया है। अष्टम अध्याय में रंगमंचीय दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया है। नवम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा संयत तथा स्पष्ट है। व्याकरण संबंध अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध-टंकण धूमिल तथा अस्पष्ट है, जिल्दबंदी अच्छी है।

54. शोधार्थी - सांगवान, अभय राम

शोध-विषय - डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों में व्यक्त युग-चेतना

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - राधाकृष्ण

वर्ष - 1997

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध 7 अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल 267 पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में लाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकों का सामान्य परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में युग-चेतना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में लाल के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक चेतना का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में राजनैतिक चेतना का उल्लेख किया गया है। षष्ठ अध्याय में साहित्यिक एवं सांस्कृतिक चेतना का विश्लेषण किया गया है। सप्तम अध्याय में रंगमंचीयता का चित्रण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुख शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची तथा पृष्ठांकन व्यवस्थित हैं। अध्यायीकरण तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत उपलब्ध नहीं होते। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रात्मक त्रुटियां तथा वर्तनी के प्रयोग की अशुद्धियों कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

55. शोधार्थी - अंजु

शोध-विषय - भारतेन्दुयुगीन हिन्दी नाटकों में भारतीय नवजागरण और नारी

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - कपूर, प्रेमनाथ

वर्ष - 1998

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **349** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नवजागरण का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में भारतेन्दुयुगीन हिन्दी नाटकों का सामान्य परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में भारतेन्दुयुगीन हिन्दी नाटकों के परिप्रेक्ष्य में राजनीतिक जागरण का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में सांस्कृतिक एवं धार्मिक जागरण का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में सामाजिक जागरण का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में नारी-जागरण का चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय में भारतीय नवजागरण के संदर्भ में नारी का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा संयत, शैली प्रवाहपूर्ण है। संदर्भ-सूची लेखक नामानुक्रम में हैं। मात्रात्मक त्रुटियां व वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी उच्च कोटि के हैं।

56. शोधार्थी - कंवर, ममता

शोध-विषय - विष्णु प्रभाकर के नाटकों में नारी

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - सिंहल, बैजनाथ

वर्ष - 1998

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **4** खंडों के अंतर्गत **10** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **257** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **2** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में नारी का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय खंड में **1** अध्याय है। तृतीय अध्याय में विष्णु प्रभाकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय खंड में **5** अध्याय हैं। चतुर्थ अध्याय में विष्णु प्रभाकर के नाटकों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में विष्णु प्रभाकर के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में नारी के सामाजिक रूप का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में राष्ट्रीय रूप का विश्लेषण किया गया है। सप्तम अध्याय में सांस्कृतिक रूप का चित्रण किया गया है। अष्टम अध्याय में नारी-स्वतंत्रता के विविध आयामों का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ खंड में **2** अध्याय हैं। नवम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। दशम अध्याय में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत हैं। संदर्भ-सूची में आकारादिक्रम का पालन नहीं किया गया है। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा व विराम चिह्नों संबंधी अशुद्धियां हैं। प्रबंध का टंकण कार्य सामान्य स्तर का है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

57. शोधार्थी - गुप्त, विपिन

शोध-विषय - हिन्दी नाटक ः समसामयिक परिवेश

(आठवें दशक से नवें दशक तक)

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - गुप्त, आनन्द कुमार

वर्ष - 1998

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **246** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में समसामयिकता का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में आठवें और नौवें दशक के परिवेश का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में हिन्दी नाटक का तात्त्विक परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में आठवें और नौवें दशक के हिन्दी नाटकों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में आठवें और नौवें दशक के हिन्दी नाटकों के परिप्रेक्ष्य में समसामयिक राजनीतिक परिवेश का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में समसामयिक सामाजिक परिवेश का चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय में समसामयिक आर्थिक परिवेश का उल्लेख किया गया है। अष्टम अध्याय में समसामयिक धार्मिक परिवेश का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण तथा पृष्ठांकन व्यवस्थित हैं। पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा प्रभावशाली है। मात्रात्मक त्रुटियां व वर्तनी संबंधी अशुद्धियां हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उच्च स्तर का है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

58. शोधार्थी - मेहता, नीना

शोध-विषय - हिन्दी व्यंग्य नाटकों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - मेंहदीरत्ता, वीरेन्द

वर्ष - **1998**

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **4** खंडों के अंतर्गत **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **272** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के

प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **3** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में समाजशास्त्र का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में व्यंग्य के स्वरूप और हिन्दी व्यंग्य नाटक परम्परा का अध्ययन किया गया है। द्वितीय खंड में **3** अध्याय हैं। चतुर्थ अध्याय में हिन्दी व्यंग्य नाटकों में अभिव्यक्त सामाजिक संरचना और सामाजिक संस्थाओं को विश्लेषित किया गया है। पंचम अध्याय में हिन्दी व्यंग्य नाटकों के परिप्रेक्ष्य में अर्थव्यवस्था और परम्परित नैतिकता का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में हिन्दी व्यंग्य नाटकों के परिप्रेक्ष्य में सत्ता और राजनीति का चित्रण किया गया है। तृतीय खंड में सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। चतुर्थ खंड में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां न के बराबर है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

59. शोधार्थी - रानी, गीता

शोध-विषय - शंकर शेष के नाटकों में सामाजिक यथार्थ

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - भावुक, कृष्ण

वर्ष - **1998**

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **10** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **226** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में सामाजिक यथार्थ के सैद्धान्तिक विवेचन के साथ, शंकर शेष के

व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में प्रसादोत्तर हिन्दी नाटकों की मुख्य प्रवृतियों का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में शंकर शेष के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में आर्थिक यथार्थ का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में दार्शनिक यथार्थ का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में धार्मिक यथार्थ का चित्रण किया गया है। षष्ठ अध्याय में नैतिक यथार्थ का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में राजनीतिक और प्रशासनिक यथार्थ का विवेचन किया गया है। अष्टम अध्याय में सांस्कृतिक यथार्थ का उल्लेख किया गया है। नवम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। दशम अध्याय में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

60. शोधार्थी - सिन्धु, निर्मला

शोध-विषय - डॉ. रामकुमार वर्मा के नाटकों में पात्र-योजना

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - पाण्डेय, रामसजन

वर्ष - **1998**

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **298** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में रामकुमार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में पात्र-योजना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में वर्मा के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में पु ष-पात्रों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में नारी-पात्रों का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में पात्रावतरण की उपलब्धियों का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम व्यतिक्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। अध्यायीकरण में अध्यायों के समक्ष पृष्ठांकन नहीं किया गया है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

61. शोधार्थी - महाजन, सुधीर कुमार

शोध-विषय - रंगमंचीय प्रतिमानों के आधार पर मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों का विशेष अध्ययन

विश्वविद्यालय - जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

निर्देशक - द्विवेदी, अेमप्रकाश

वर्ष - 1999

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - बहुत प्रयास करने पर भी उपर्युक्त शोध-प्रबंध पुस्कालय में नहीं मिला।

62. शोधार्थी - रानी, वीना

शोध-विषय - भारतेन्दु हरिशचन्द्र के नाटकों में युग-परिदृश्य

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - सिंहल, बैजनाथ

वर्ष - 1999

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **237** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में भारतेन्दु हरिशचन्द्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में युग-परिदृश्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में भारतेन्दु हरिशचन्द्र के नाटकों के संदर्भ में समाज का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में आर्थिकता का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में राजनीति का विश्लेषण किया गया है।

षष्ठ अध्याय में संस्कृति का चित्रण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमानुसार है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण ठीक हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां भी यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा आसान है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां यदाकदा मिलती हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

63. शोधार्थी - शर्मा, संगीता

शोध-विषय - जयशंकर प्रसाद के नाटकों में अन्तर्द्वन्द्व

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - राधाकृष्ण

वर्ष - 1999

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **284** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में प्रसाद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में अन्तर्द्वन्द्व का तात्त्विक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में अन्तर्द्वन्द्व के प्रकारों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में प्रसाद के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में युगबोध का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में जयशंकर प्रसाद के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में अन्तर्द्वन्द्व का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक ठीक है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम शीर्षक के नीचे अत्यंत बारीक मुद्रण में दिए गए हैं। विषय-सूची व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक दिए गए हैं। उपसंहार में शोध-संकेत अनुपस्थित हैं। प्रबंध की भाषा कसी हुई है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां बहुत कम हैं। प्रबंध का टंकण ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

64. शोधार्थी - राठी, सुरजो

शोध-विषय - डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों में संवाद पर आधारित चरित्र-चित्रण

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - मिश्र, नरेश

वर्ष - 2000

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **250** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नाटक का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में लाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में लाल के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में संवाद और अभिनेयता में चरित्रांकन का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में संवाद की भावाभिव्यक्ति और लयात्मकता के आधार पर चरित्रांकन का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में संवादों की भाषा-आधार पर चरित्रांकन का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची सही है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत उपलब्ध हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

65. शोधार्थी - रानी, बबीता

शोध-विषय - समकालीन हिन्दी नाटक **(1971-90)** में राष्ट्रीय समस्याएं ः समाजशास्त्रीय अध्ययन

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - अवस्थी, ओम्

वर्ष - 2000

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **414** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में राष्ट्रीय समस्याओं और समाजशास्त्र का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में समकालीन हिन्दी नाटकों के संदर्भ में राष्ट्रीय समस्याओं के आयामों का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में सामाजिक संरचना की राष्ट्रीय समस्याओं का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में राष्ट्रीय संस्थाओं की समस्याओं का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में समाज-राजनैतिक परिवर्तन की राष्ट्रीय समस्याओं का चित्रण किया गया है। षष्ठ अध्याय में सामाजिक नियंत्रण की राष्ट्रीय समस्याओं का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में भीड़-व्यवहार की राष्ट्रीय समस्याओं का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में राष्ट्रीय मानदंडों की राष्ट्रीय समस्याओं का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

66. शोधार्थी - सिंह, रणवीर

शोध-विषय - उपेन्द्रनाथ अश्क के नाटकों में नारी

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - शर्मा, सत्यनारायण

वर्ष - 2000

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **282** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में अश्क के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ, नारी का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में अश्क के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में नारी की सामाजिक समस्याओं का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में नारी की आर्थिक समस्याओं का विवेचन किया गया

है। चतुर्थ अध्याय में नारी की धार्मिक समस्याओं का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में नारी की राजनीतिक समस्याओं का चित्रण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-नियमों का पालन करता है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षकों की संरचना की गई है। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा प्रभावशाली है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध का टंकण तथा जिल्दबंदी उत्तम हैं।

67. शोधार्थी - मलिक, राजकुमार

शोध-विषय - साठोत्तर हिन्दी नाटकों में व्यक्ति स्वातंत्र्य

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - गुप्ता, आनन्द कुमार

वर्ष - 2001

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **287** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में व्यक्ति स्वातंत्र्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हिन्दी नाटकों के संदर्भ में व्यक्ति स्वातंत्र्य का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में साठोत्तर हिन्दी नाटकों में व्यक्ति स्वातंत्र्य के परिप्रेक्ष्य में यथार्थ का चित्रण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में दाम्पत्य संबंधों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में स्त्री-पु ष संबंधों का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में आर्थिक स्वतंत्रता का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में सांस्कृतिक स्वतंत्रता का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक सही है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां

यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सजग नहीं रहा है। प्रबंध-टंकण अस्पष्ट है तथा जिल्दबंदी सामान्य है।

68. शोधार्थी - वीणा

शोध-विषय - स्वदेश दिपक के नाटकों में व्यंग्य विविधता

विश्वविद्यालय - जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

निर्देशक - शर्मा, परमेश्वरी

वर्ष - 2001

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - बहुत प्रयास करने पर भी उपर्युक्त शोध-प्रबंध पुस्कालय में नहीं मिला।

69. शोधार्थी - शर्मा, नीति

शोध-विषय - लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों में भारतीयता

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - पाण्डेय, शशिभूषण 'शीतांशु'

वर्ष - 2001

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **9** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **287** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में लक्ष्मीनारायण लाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में भारतीयता का तात्त्विक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में भौगोलिक परिवेशगत भारतीयता का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में यथार्थगत सामाजिक-राजनीतिक भारतीयता का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में पुनरूत्थानवादी सांस्कृतिक मूल्यगत भारतीयता का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में राष्ट्रीय संदर्भगत सामाजिक भारतीयता का चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय में स्थिरधारणागत दार्शनिक भारतीयता का उल्लेख किया गया है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। नवम अध्याय में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमानुसार है। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा, विराम चिह्न तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य सामान्य स्तर का है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

70. शोधार्थी - सिंगला, ऋतु

शोध-विषय - साठोत्तरी हिन्दी नाटकों में व्यक्तित्व विघटन ः 1961 से 1980 तक

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - लाम्बा, शान्ता

वर्ष - 2001

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत शोध-प्रबंध 6 अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल 182 पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय मे व्यक्तित्व विघटन का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय के प्रथम खंड में व्यक्तित्व विघटन की पृष्ठभूमि दी गई है। द्वितीय अध्याय के द्वितीय खंड में व्यक्तित्व विघटन की दिशाओं का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में साठोत्तरी हिन्दी नाटकों के संदर्भ में व्यक्तित्व निरूपण एवं व्यक्तित्व विघटन का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में साठोत्तरी हिन्दी नाटकों के संदर्भ में व्यक्तित्व विघटन की गौण दिशाओं का चित्रण किया गया है। पंचम अध्याय में मनोविकार ग्रस्त व्यक्तित्व का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में अलगाव एवं संत्रास का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। मात्रा तथा विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य अच्छा है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

71. शोधार्थी - कौर, सुरिन्द्रपाल

शोध-विषय - भीष्म साहनी के नाटकों में मध्यवर्गीय चेतना

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - भुल्लर, हरसिमरन कौर

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **9** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **397** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में मध्यवर्गीय चेतना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में भीष्म साहनी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में आर्थिक परिप्रेक्ष्य में भीष्म साहनी के नाटकों में मध्यवर्गीय चेतना का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में धार्मिक परिप्रेक्ष्य में मध्यवर्गीय चेतना का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में मध्यवर्गीय चेतना का चित्रण किया गया है। षष्ठ अध्याय में राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में मध्यवर्गीय चेतना को विश्लेषित किया गया है। सप्तम अध्याय में सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में मध्यवर्गीय चेतना का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में नैतिक परिप्रेक्ष्य में मध्यवर्गीय चेतना का उल्लेख किया गया है। नवम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा प्रभावशाली है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

72. शोधार्थी - तोमर, खतरी राम

शोध-विषय - लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों में सामाजिक चेतना

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - सिंगल, रामधारी

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **3** खंडों के अंतर्गत **9** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **440** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **3** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में लक्ष्मीनारायण लाल के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं तदयुगीन परिवेश का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में सामाजिक चेतना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय खंड में **5** अध्याय हैं। चतुर्थ अध्याय में लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में नैतिक चेतना का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में आर्थिक चेतना का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में राजनैतिक चेतना का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में धार्मिक चेतना का विश्लेषण किया गया है। अष्टम अध्याय में सांस्कृतिक चेतना का चित्रण किया गया है। तृतीय खंड में नवम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक नहीं है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

73. शोधार्थी - देवेन्द्र

शोध-विषय - बीसवीं सदी के अंतिम दो दशकीय हिन्दी नाटक ः दृष्टि एवं शिल्प

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - सिंह, राजेन्द्र

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **258** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में दृष्टि एवं शिल्प का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय

में हिन्दी नाटक और नाटककारों का सामान्य परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में अनूदित हिन्दी एवं नुक्कड़ नाटक और नाटककारों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में दृष्टि के संदर्भ में हिन्दी नाटकों का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में दृष्टि के परिप्रेक्ष्य में अनूदित एवं नुक्कड़ नाटकों का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में कथ्य-शिल्प का चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय में रंगशिल्प का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

74. शोधार्थी - बाला, पूनम

शोध-विषय - प्रसाद के नाटक ः राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - सिवाच, विद्या

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **372** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में राष्ट्रीयता का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में युगीन परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीयता का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में प्रसाद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में प्रसाद के नाटकों में राष्ट्रीयता के परिप्रेक्ष्य में सामाजिकता का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में राजनीतिक संदर्भ में राष्ट्रीयता का चित्रण किया गया है। षष्ठ अध्याय में सांस्कृतिक संदर्भ में राष्ट्रीयता का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में प्राकृतिक संदर्भ में राष्ट्रीयता का अध्ययन किया गया है। अंत में

शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम शीर्षक के नीचे मध्य में दिए गए हैं। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधाकर्त्री सजग रही है। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

75. शोधार्थी - बाई, भीमा

शोध-विषय - स्वतंत्रता आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में प्रसाद के नाटकों में नारी-पात्र

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - सुन्दर, श्रीमती निर्मल

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **316** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का सामान्य अध्ययन किया गया है। द्वितीय अध्याय में प्रसाद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ, नारी का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में प्रसाद के नाटक 'चन्द्रगुप्त' के आधार पर नारी-पात्रों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में 'स्कन्दगुप्त' नाटक के आधार पर नारी-पात्रों का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में 'अज्ञातशत्रु' नाटक के आधार पर नारी-पात्रों का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के आधार पर नारी-पात्रों का चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय में 'राज्यश्री' नाटक के आधार पर नारी-पात्रों का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं।

उपसंहार में शोध संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। संदर्भ-सूची में आकारादि नियम का पालन नहीं किया गया है। मात्रा व विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उत्तम है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

76. शोधार्थी - रावत, अलका

शोध-विषय - हिन्दी गीति नाट्य ः इतिहास और संकल्प का कलात्मक संयोग

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - राजगु , गोविन्दनाथ

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **312** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में इतिहास और संकल्प का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में गीतिकाव्य का सामान्य परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में हिन्दी गीतिनाट्यों के परिप्रेक्ष्य में इतिहास एवं गीति नाट्य के प्राचीन-स्रोतों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में गीति नाट्य के उद्भव और विकास का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथा पर आधारित कतिपय प्रमुख गीति नाट्यों की समीक्षा की गई है। षष्ठ अध्याय में स्वातन्त्र्योत्तर गीति नाट्यों के परिप्रेक्ष्य में समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषण किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक-शोध प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन सही है। पाद-टिप्पणी में पुस्तक का नाम पहले दिया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नहीं दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

77. शोधार्थी - वासिष्ठ, सुनीता

शोध-विषय - लाला देवतराम कृत 'श्रीराम नाटक' का संपादन एवं विश्लेषण

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - गुप्त, लालचंद 'मंगल'

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **4** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **290** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में 'श्रीराम नाटक' और लाल देवतराम का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में 'श्रीराम नाटक' के संपादन और विश्लेषण का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

78. शोधार्थी - शर्मा, राम औतार

शोध-विषय - भीष्म साहनी का नाट्य साहित्य ः संवेदना और शिल्प

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - आर्य, बुद्धदेव

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **240** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में भीष्म साहनी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है।

द्वितीय अध्याय में संवेदना और शिल्प का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में भीष्म साहनी के नाट्य साहित्य के संदर्भ में संवेदना का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में कथानक और चरित्र-चित्रण शिल्प का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में संवाद और भाषा का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में अभिनेयता और रंगशिल्प का चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक व उपशीर्षक दिए गए हैं। उपसंहार में शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

79. शोधार्थी - सुमन

शोध-विषय - हरिकृष्ण प्रेमी के नाटकों में सांस्कृतिक चेतना

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - सिंह, आजाद

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **254** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में सांस्कृतिक चेतना का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में प्रेमी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में प्रेमी के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में सौन्दर्य भावना का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में प्रेम-भावना का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में प्रकृति-परिवेश का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में

सामाजिक भावना का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम शीर्षक के नीचे निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण सही हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक दिए गए हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। संदर्भ-सूची लेखक नामानुक्रम में है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उच्च स्तर का है तथा जिल्दबंदी ठीक है।

80. शोधार्थी - स्वामी, देवेन्द्र

शोध-विषय - बीसवीं सदी के अतिंम दो दशकीय हिन्दी नाटक ः दृष्टि एवं शिल्प

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - सिंह, राजेन्द्र

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध 7 अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल 259 पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में हिन्दी नाटक और रंगमंच का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हिन्दी नाटक और नाटककारों का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में अनूदित हिन्दी और नुक्कड़ नाटक तथा नाटककारों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में दृष्टि के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी नाटकों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में दृष्टि के परिप्रेक्ष्य में अनूदित हिन्दी एवं नुक्कड़ नाटकों का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में कथ्य-शिल्प का चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय में रंगशिल्प का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची सही है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा तथा विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क नहीं रहा है। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

81. शोधार्थी - कुमार, नरेश

शोध-विषय - समकालीन हिन्दी नाटकों में युगबोध ः सन् **1990** से **2000** तक

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - रानी, पुष्पा

वर्ष - 2003

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **325** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में समकालीनता और युगबोध का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में समकालीन हिन्दी नाटकों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में समकालीन हिन्दी नाटकों के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक युगबोध का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में राजनीतिक युगबोध का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में आर्थिक युगबोध का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में सांस्कृतिक युगबोध का चित्रण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची ठीक है तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेतों का पालन किया गया है। प्रबंध की भाषा संयत है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

82. शोधार्थी - सिंह, जसपाल

शोध-विषय - हिन्दी में नाट्य भाषा का विकासात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - प्रकाश, जय

वर्ष - 2004

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **252** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में भाषा और नाट्य भाषा का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में भारतेन्दु युग की नाट्य भाषा का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में प्रसाद युग की नाट्य भाषा का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में प्रसादोत्तर युग की नाट्य भाषा का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में साठोत्तर युग की नाट्य भाषा का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नहीं दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

83. शोधार्थी - चंद, सुभाष

शोध-विषय - अन्तिम दो दशकों के हिन्दी नाटकों में सामाजिक चेतना

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - अत्री, शशिप्रभा

वर्ष - 2005

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **298** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में सामाजिक चेतना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हिन्दी नाटक का तात्त्विक परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में अन्तिम दो दशकों की परिस्थितियों और परिवेश का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में अन्तिम दो दशकों के हिन्दी नाटकों का सामान्य परिचय दिया गया है। पंचम अध्याय में अन्तिम दो दशकों के हिन्दी

नाटकों के संदर्भ में सामाजिक चेतना का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। मात्रा तथा विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध का टंकण कार्य ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

84. शोधार्थी - रानी, गुरदीप

शोध-विषय - आठवें दशक के नाटकों में मिथकीय आयाम

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - खुमार, सुरिन्दर कौर

वर्ष - 2005

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **294** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में मिथक का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में मिथक के निकटवर्ती घटकों का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में आधुनिक हिन्दी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में मिथक का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में आठवें दशक के नाटकों के संदर्भ में मिथकीय आयामों का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में इतर प्रसंगों से संबंधित मिथकीय नाटकों का चित्रण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत उपलब्ध हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। संदर्भ-सूची में आकारादि नियम का पालन नहीं किया गया है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

85. शोधार्थी - कुमार, राजेन्द्र

शोध-विषय - हरियाणा के लोक-नाट्यों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - शर्मा, भारतभूषण

वर्ष - 2006

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **259** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में समाजशास्त्र और लोक-नाट्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हरियाणा का सामान्य परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में हरियाणा के लोक-साहित्य का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में हरियाणवी संगीतकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। पंचम अध्याय में हरियाणवी लोक-नाट्यों का तात्त्विक विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में हरियाणा के लोक-नाट्यों का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची सही है। अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक दिए गए हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा-शैली स्पष्ट है। मात्रात्मक अशुद्धियां कम हैं। टंकण ठीक एवं जिल्दबंदी मजबूत है।

86. शोधार्थी - कुमार, सत

शोध-विषय - साठोत्तर हिन्दी नाट्य साहित्य के परिप्रेक्ष्य में भीष्म साहनी के नाटकों का अध्ययन

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - रानी, पुष्पा

वर्ष - 2006

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **310** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नाटक का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में साठोत्तर की अवधारणा का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में भीष्म साहनी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में साहनी के सठोत्तर हिन्दी नाटकों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। पंचम अध्याय में साठोत्तर हिन्दी नाट्य साहित्य के परिप्रेक्ष्य 'कबिरा खड़ा बाज़ार में' नाटक का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में 'हानूश' नाटक का विश्लेषण किया गया है। सप्तम अध्याय में 'माधवी' नाटक का चित्रण किया गया है। अष्टम अध्याय में 'मुआवज़े' नाटक का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। भाषागत व वर्तनी संबंधी अशुद्धियां हैं। प्रबंध का टंकण तथा जिल्दबंदी सामान्य हैं।

87. शोधार्थी - पूनम

शोध-विषय - समकालीन हिन्दी नाटकों में नारी-विमर्श

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - रानी, पुष्पा

वर्ष - 2006

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत शोध-प्रबंध **3** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **169** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में समकालीनता का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में नारी-विमर्श का तात्त्विक अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में समकालीन हिन्दी नाटकों के

परिप्रेक्ष्य में नारी-विमर्श के विविध आयामों का विवेचन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा व विराम-चिह्नों की अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क नहीं रही है। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी उच्च कोटि के हैं।

88. शोधार्थी - राजकुमार

शोध-विषय - सुरेश शुक्ल 'चन्द्र' के नाटकों में मूल्य-चेतना

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - रानी, पुष्पा

वर्ष - 2006

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **166** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में मूल्य-चेतना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में नाटक का तात्त्विक अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में चन्द्र की जीवन-यात्रा और साहित्य-कर्म का परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में चन्द्र के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में मूल्य-चेतना के विविध आयामों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण ठीक हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अनुच्छेदों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट, शैली प्रवाहपूर्ण है। अशुद्धियां अल्प हैं एवं टंकण अच्छा है। जिल्दबंदी सशक्त है।

89. शोधार्थी - कुमार, दीप

शोध-विषय - शंकर शेष के नाटकों में सांस्कृतिक चेतना

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - सिंह, रणधीर

वर्ष - 2007

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **312** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में शंकर शेष के व्यक्तित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में शंकर शेष के कृतित्व का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में सांस्कृतिक चेतना का तात्त्विक विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में शंकर शेष के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक चेतना का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में धार्मिक चेतना का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में नैतिक चेतना का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा पृष्ठांकन ठीक हैं। अध्याय व्यवस्थित है। पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेतों का निर्वाह किया गया है। प्रबंध की भाषा सुगम है। संदर्भ-सूची लेखक नामानुक्रम में है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सजग रहा है। टंकर्ण-कार्य उत्तम तथा सुपाठ्य है, जिल्दबंदी अच्छी है।

90. शोधार्थी - चौधरी, कविता

शोध-विषय - हिन्दी एकांकी साहित्य को डॉ. रामकुमार वर्मा का योगदान

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - रानी, पुष्पा

वर्ष - 2007

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **158** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में वर्मा के एकांकी साहित्य के विविध आयामों का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में वर्मा के एकांकी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में राजनीतिक दृष्टिकोण का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में आर्थिक दृष्टिकोण का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में ऐतिहासिक दृष्टिकोण का चित्रण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा संयत तथा स्पष्ट है। वर्तनी तथा मात्रा संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध का टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

91. शोधार्थी - नीलम

शोध-विषय - श्रवण कुमार गोस्वामी के नाट्य साहित्य में सामाजिक चेतना

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - रानी, पुष्पा

वर्ष - 2007

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **3** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **236** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में सामाजिक चेतना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में गोस्वामी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में गोस्वामी के नाट्य साहित्य के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक चेतना का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों के मध्य उपशीर्षक दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रात्मक त्रुटियां व वर्तनी के प्रयोग की अशुद्धियां हैं। प्रबंध-टंकण स्पष्ट है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

92. शोधार्थी - प्रभा, रश्मि

शोध-विषय - हिन्दी रेडियो नाटक ः परम्परा और प्रयोग

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - वेदालंकार, विजय कुमार

वर्ष - 2007

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **228** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में रेडियो नाटक का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हिन्दी रेडियों नाटक की परम्परा का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में परम्परा और प्रयोग के परिप्रेक्ष्य में स्वातंत्र्योत्तर **(1951-1960)** हिन्दी रेडियो नाटक का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में परम्परा और प्रयोग के परिप्रेक्ष्य में **(1961-1970)** हिन्दी रेडियो नाटक का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में परम्परा और प्रयोग के परिप्रेक्ष्य में **(1971-1980)** हिन्दी रेडिया नाटक का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में परम्परा और प्रयोग के परिप्रेक्ष्य में **(1981-1990)** हिन्दी रेडिया नाटक का चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय में परम्परा और प्रयोग के परिप्रेक्ष्य में **(1991-2004)** हिन्दी रेडियो नाटक का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां रह गई हैं। प्रबंध का टंकण ठीक है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

93. शोधार्थी - राजबीर

शोध-विषय - नुक्कड़ नाटक ः विकासात्मक स्वरूप

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - गुप्त, आनन्द कुमार

वर्ष - 2007

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **238** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में हिन्दी नाटक और रंगमंच का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में युगीन परिस्थितियों का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में नुक्कड़ नाटक का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में नुक्कड़ नाटक के परिप्रेक्ष्य में नाट्य-मंच और नाटककारों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में कथ्य और संवेदना का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में शिल्प और प्रस्तुति का चित्रण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध का टंकण कार्य ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

94. शोधार्थी - संगीता

शोध-विषय - समकालिन हिन्दी नाटकों में मूल्य-बोध ः **1980** से अद्यतन

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - वाशिष्ठ, सरिता

वर्ष - 2007

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **239** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित

की गई है। प्रथम अध्याय में समकालीनता का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में मूल्य-बोध का तात्त्विक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में नाटक का सैद्धान्तिक अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में समकालीन हिन्दी नाटकों के परिप्रेक्ष्य में राजनैतिक मूल्यों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में सामाजिक मूल्यों का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में नैतिक मूल्यों का चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय में आर्थिक मूल्यों का उल्लेख किया गया है। अष्टम अध्याय में धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। कहीं-कहीं मात्रा व विराम चिह्नों संबंधी अशुद्धियां मिलती हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उच्च स्तर का है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

95. शोधार्थी - सांगवान, आशा

शोध-विषय - जगदीश चन्द्र माथुर के नाटकों में नारी के विविध रूप

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - शर्मा, जयप्रकाश

वर्ष - 2007

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **217** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में जगदीश चन्द्र माथुर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में नारी का तात्त्विक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में माथुर के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में नारी संबंधी अवधारणा का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में नारी के विविध रूपों का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में आधुनिकता के संदर्भ में नारी का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन सही है। पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अध्यायों में उपशीर्षक की संरचना की गई है। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली सुगठित है। मात्रा एवं विराम चिह्नों का शुद्ध प्रयोग दृष्टिगत होता है। प्रबंध का टंकण एवं जिल्दबंदी उत्तम हैं।

96. शोधार्थी - कुमारी, विद्या

शोध-विषय - डॉ. रामकुमार वर्मा के नाटकों में राष्ट्रीय चेतना

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - गुप्त, मंजुला

वर्ष - 2008

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **4** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **303** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में हिन्दी नाटक का तात्त्विक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में राष्ट्रीय चेतना का सैद्धान्तिक अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में वर्मा के नाटकों के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय चेतना का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

97. शोधार्थी - कौशिक, ऋतु

शोध-विषय - भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों की अभिनेयता का मूल्यांकन

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - मिश्र, नरेश **सह-निर्देशक -** कुमार, सुरेन्द्र

वर्ष - 2008

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत शोध-प्रबंध 7 अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल 161 पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नाटक और अभिनेयता का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों की अभिनेयता के परिप्रेक्ष्य में कथ्य और कथावस्तु का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में पात्र-योजना का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में रंग-निर्देश का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में संवाद-योजना का चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय में नाट्य-भाषा का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची एवं अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। विराम चिह्नों की त्रुटियां रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उच्च स्तरीय है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

98. शोधार्थी - चावला, अंजु

शोध-विषय - लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों में मानवीय मूल्य

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - जितेन्द्र, सुधा

वर्ष - 2008

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **10** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **212** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में लक्ष्मीनारायण लाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में मूल्यों का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में मूल्यों के वर्गीकरण के साथ, मानवीय मूल्यों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में लाल के प्रमुख नाटकों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। पंचम अध्याय में लाल के नाटकों में मानवीय मूल्यों के संदर्भ में जैविक मूल्यों का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में पराजैविक मूल्यों का विवेचन किया गया है। सप्तम अध्याय में सामाजिक मूल्यों का विश्लेषण किया गया है। अष्टम अध्याय में मानविकी मूल्यों का चित्रण किया गया है। नवम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय तथा उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। दशम अध्याय में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रा, विराम चिह्न व वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध का टंकण तथा जिल्दबंदी उत्तम हैं।

99. शोधार्थी - शर्मा, प्रियंका

शोध-विषय - जयशंकर प्रसाद के नाट्य सहित्य में पुनर्जागरण

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - शर्मा, सत्यनारायण

वर्ष - 2008

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **320** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में पुनर्जागरण का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में

प्रसाद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में प्रसाद के नाट्य सहित्य के परिप्रेक्ष्य में राजनीतिक पुनर्जागरण का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में सांस्कृतिक-दार्शनिक पुनर्जागरण का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में धार्मिक पुनर्जागरण का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में आर्थिक पुनर्जागरण का चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम मध्य भाग में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। संदर्भ-सूची लेखक नामानुक्रम में है। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रा व विराम चिह्नों की अशुद्धियां हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

100. शोधार्थी - अनुराधा

शोध-विषय - हिन्दी बाल नाटक और रंगमंच ः परम्परा और स्वरूप

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - मिश्र, नरेश

वर्ष - 2009

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **252** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में हिन्दी के बाल नाटकों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में हिन्दी के बाल रंगमंच का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में परम्परा और स्वरूप का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में हिन्दी बाल नाटकों के परिप्रेक्ष्य में नाटककारों का परिचय दिया गया है। पंचम अध्याय में हिन्दी बाल नाटकों के परिप्रेक्ष्य में कथ्य और स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में हिन्दी बाल रंगमंच के स्वरूप का चित्रण

किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-नियमों के अनुरूप है। विषय-सूची व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा, विराम चिह्न व वर्तनी संबंधी अशुद्धियां रह गई हैं। प्रबंध-टंकण ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

101. शोधार्थी - कुमार, सुरेन्द्र

शोध-विषय - हिन्दी नाटकों में धार्मिक भावना

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - अत्रि, शशिप्रभा

वर्ष - 2009

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **235** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में नाटक और धार्मिक भावना का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हिन्दी नाटकों में धार्मिक भावना के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक पक्ष का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में सांस्कृतिक पक्ष का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में आर्थिक पक्ष का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में राजनीतिक पक्ष का चित्रण किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुख शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची तथा पृष्ठांकन व्यवस्थित हैं। अध्यायीकरण तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत उपलब्ध हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रात्मक त्रुटियां तथा वर्तनी के प्रयोग की अशुद्धियों कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

102. शोधार्थी - मैनन, मंजली

शोध-विषय - डॉ. रामकुमार वर्मा के नाट्य सहित्य में हास्य और व्यंग्य

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - भुल्लर, हरिसिमरन कौर

वर्ष - 2010

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **562** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में डॉ. रामकुमार वर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में हास्य का तात्त्विक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में व्यंग्य का सैद्धान्तिक अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में हिन्दी नाटकों के संदर्भ में हास्य और व्यंग्य का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में वर्मा के नाट्य सहित्य के परिप्रेक्ष्य में हास्य-रस का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में वर्मा के ऐतिहासिक नाटकों के परिप्रेक्ष्य में हास्य और व्यंग्य का चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

विवेच्य विश्वविद्यालयों में नाटक एवं एकांकी संबंधी **102** शोध-प्रबंध (नाटक संबंधी **100** शोध-प्रबंध तथा एकांकी संबंधी **2** शोध-प्रबंध) प्राप्त हुए हैं। सबसे ज्यादा शोध-प्रबंध महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक में सम्पन्न हुए हैं। यहां कुल **27** शोध-विषयों पर शोध-कार्य हुआ है। कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र में **20** शोध-विषयों पर, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में **18** शोध-विषयों पर, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में **14** शोध-विषयों पर, गु नानक देव

विश्वविद्यालय, अमृतसर में **10** शोध-विषयों पर, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू **9** में शोध-विषयों पर, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में **3** शोध-विषयों पर तथा कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर में **1** शोध-विषय पर शोध-कार्य उपलब्ध हुआ है।

9.2 इतर हिन्दी गद्य साहित्य (कथा-साहित्य एवं नाटक साहित्य से इतर) संबंधी शोध-कार्य

ः वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन-

विवेच्य विश्वविद्यालयों में इतर हिन्दी गद्य साहित्य (कथा-साहित्य एवं नाटक साहित्य से इतर) संबंधी **44** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं, इनका क्रमानुसार वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन इस प्रकार है-

1. शोधार्थी - फोर, रोहनीत सिंह

शोध-विषय - हिन्दी साक्षात्कार साहित्य में व्यक्तित्व का प्रकाशन

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - विश्वबंधु

वर्ष - **1991**

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **365** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में साक्षात्कार की परिभाषा एवं स्वरूप प्रकट किया गया है। द्वितीय अध्याय में व्यक्तित्व एवं व्यक्तित्व प्रकाशन की चर्चा की गई है। तृतीय अध्याय में साक्षात्कार साहित्य का विविध संदर्भों के आधार पर अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में व्यक्तित्व और साक्षात्कार साहित्य में अन्तर्संबंध को विश्लेषित किया गया है। पंचम अध्याय में पुस्तक रूप में प्राप्य साक्षात्कार साहित्य द्वारा व्यक्तित्व का प्रकाशन वर्णित है। षष्ठ अध्याय में पत्र-पत्रिकाओं में प्राप्य साक्षात्कार साहित्य द्वारा व्यक्तित्व का प्रकाशन वर्णित है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नहीं दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क नहीं रहा है। प्रबंध-टंकण अस्पष्ट-सा है तथा जिल्दबंदी साधारण है।

2. **शोधार्थी** - यादव, सुरेन्द्र

शोध-विषय - हिन्दी पत्रकारिता का हिन्दी गद्य साहित्य के विकास में योगदान

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - बंसल, पुष्पा

वर्ष - **1991**

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **316** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में पत्रकारिता का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हिन्दी पत्रकारिता का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में हिन्दी पत्रकारिता **(**सन् **1900)** के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी गद्य साहित्य का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में हिन्दी पत्रकारिता **(**सन् **1900** से **1947**तक**)** के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी गद्य साहित्य का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में हिन्दी पत्रकारिता **(**सन् **1947** से अद्यतन**)** के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी गद्य साहित्य का उल्लेख किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सजग नहीं रहा है। प्रबंध-टंकण अस्पष्ट है तथा जिल्दबंदी सामान्य है।

3. शोधार्थी - त्रिखा, चन्द्र दत्त

शोध-विषय - पंजाब की हिन्दी पत्रकारिता (**1947** से आज तक)

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - गुलाटी, यश

वर्ष - 1992

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **248** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में हिन्दी पत्रकारिता का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में पत्रकारिता का वर्गीकरण किया गया है। तृतीय अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी पत्रकारिता का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में पंजाब की हिन्दी पत्रकारिता का परिचय दिया गया है। पंचम अध्याय में पंजाब की पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य में वंश परम्परा और लघु पत्रकारिता का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में पंजाब की पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य में दैनिक ट्रिब्युन व जनसत्ता की उपलब्धियों का चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय में पंजाब की पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य में संगठन-प्रबंध एवं समस्याओं का उल्लेख किया गया है। अष्टम अध्याय अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य के नए आयामों का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क नहीं रहा है। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी सामान्य हैं।

4. शोधार्थी - बत्रा, अशोक

शोध-विषय - कुबेरनाथ राय के निबंध ः वस्तु एवं शिल्प

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - खण्डेलवाल, शिव कुमार

वर्ष - 1992

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **349** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में हिन्दी निबंध का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में कुबेरनाथ राय के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में राय के निबंध साहित्य का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में राय के निबंध के परिप्रेक्ष्य में वस्तु पक्ष का तात्त्विक अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में कल्पना एवं अनुभूति वैभव का उल्लेख किया गया है। षष्ठ अध्याय में जीवन-दृष्टि का चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय में शिल्प का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत अनुपस्थित हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। मात्रा तथा विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य अस्पष्ट एवं धूमिल-सा है तथा जिल्दबंदी सामान्य है।

5. शोधार्थी - रानी, उषा

शोध-विषय - पत्र साहित्य के आधार पर हिन्दी साहित्येतिहास और आलोचना का पुनर्निरीक्षण : **1921-1970**

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - कुन्तल, रमेश 'मेघ'

वर्ष - **1992**

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **638** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में जीवनीपरक प्रमुख साहित्यरूपों के स्वरूप एवं आयामों का अध्ययन किया गया है। द्वितीय अध्याय में आधुनिक हिन्दी साहित्येतिहास में प्रमुख जीवनीपरक साहित्य रूपों

का विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में हिन्दी साहित्येतिहास और आलोचना के परिप्रेक्ष्य में पत्र साहित्य का विश्लेषण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में सन् **1921** से **1935** तक के पत्र साहित्य के आधार पर हिन्दी साहित्येतिहास और आलोचना का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में सन् **1935** से **1945** तक, षष्ठ अध्याय में सन् **1946** से **1960** तक, सप्तम अध्याय में सन् **1960** से **1970** तक के पत्र साहित्य के आधार पर हिन्दी साहित्येतिहास और आलोचना का उल्लेख किया गया है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ सही है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण में अध्यायों के समक्ष पृष्ठांकन नहीं किया गया है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा, विराम चिह्न तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य सामान्य स्तर का है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

6. **शोधार्थी** - अवस्थी, मनोहर लाल

शोध-विषय - हिमालय की हिन्दी पत्रकारिता ः स्वरूप एवं संभावनाएं

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - सारस्वत, ओमप्रकाश

वर्ष - **1993**

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **325** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में हिन्दी पत्रकारिता का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हिमाचल की हिन्दी पत्रकारिता का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में हिमाचल की कुछ प्रमुख पत्र पत्रिकाओं का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में हिमाचल की पत्रिकाओं में व्यक्त विषयों का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में सोच एवं प्रस्तुति का उल्लेख किया गया है। षष्ठ अध्याय में हिमाचल की पत्रकारिता के विकास में बाधक तत्त्वों का चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय में उपलब्धि एवं संभावनाओं का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य अस्पष्ट है तथा जिल्दबंदी ठीक है।

7. शोधार्थी - देशवाल, संतराम

शोध-विषय - हिन्दी ललित निबन्ध ः स्वरूप एवं मूल्यांकन

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - बंसल, पुष्पा

वर्ष - 1993

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **351** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में निबंध का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में लालित्य का तात्त्विक अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में ललित निबन्ध के स्वरूप एवं वैशिष्टय का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में हिन्दी ललित निबन्ध की विकासयात्रा का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में हिन्दी ललित निबन्ध का मूल्यांकन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम शीर्षक के नीचे मध्य में दिए गए हैं। मुखपृष्ठ पर शोधार्थी का नाम यथा नियम है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सजग रहा है। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

8. **शोधार्थी** - दत्त, ठाकुर

शोध-विषय - हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - सिंह, राजदेव

वर्ष - 1994

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **296** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में स्वतंत्रता से पूर्व की पत्रकारिता का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में जनसंचार के विविध रूपों का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में समाचार का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में सम्पादक का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में हिन्दी पत्रकारिता की नूतन शैलियों का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में साहित्यिक पत्रकारिता का विवेचन किया गया है। सप्तम अध्याय में पत्रकारिता के बदलते स्वरूप का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध का टंकण कार्य ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

9. **शोधार्थी** - कुमारी, प्रतिभा

शोध-विषय - विद्यानिवास मिश्र के निबन्धों में सांस्कृतिक चेतना

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - प्रकाश, जय

वर्ष - 1995

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **2** खंडों के अंतर्गत **10** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **319** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम खंड में **4** अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में सांस्कृतिक चेतना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में निबंध साहित्य का सामान्य अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में विद्यानिवास मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय खंड में **6** अध्याय हैं। पंचम अध्याय में मिश्र के निबंध साहित्य के परिप्रेक्ष्य में दर्शन का स्वरूप प्रकट किया गया है। षष्ठ अध्याय में कलाओं के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। सप्तम अध्याय में समाज के स्वरूप का उल्लेख किया गया है। अष्टम अध्याय में सांस्कृतिक परिवर्तन का अध्ययन किया गया है। नवम अध्याय में भारतीय संस्कृति का विश्लेषण किया गया है। दशम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक नहीं दिए गए हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क नहीं रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

10. शोधार्थी - कुन्तल

शोध-विषय - हिन्दी निबन्ध ः कथ्य और शिल्प

(हरियाणा के विशेष संदर्भ में) **1966-1992**

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - मलिक, भीमसिंह

वर्ष - **1996**

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **270** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में हरियाणा की स्थिति और परिवेश का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में निबन्ध का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में हरियाणा के प्राचीन निबन्धकारों **(1966** से पूर्व**)** का परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में अद्यतन निबन्धकारों का परिचय दिया गया है। पंचम अध्याय में हरियाणा के हिन्दी निबन्धों का कथ्यपरक अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में अभिव्यंजना शिल्प का विवेचन किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम व्यतिक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक व उपशीर्षक दिए गए हैं। उपसंहार में शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

11. शोधार्थी - कौर, दलजीत

शोध-विषय - हिन्दी यात्रा साहित्य में भारतीय संस्कृति ः **1981** से **1993** तक

विश्वविद्यालय - पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

निर्देशक - भावुक, कृष्ण

वर्ष - 1996

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **522** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में यात्रा साहित्य का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में भारतीय यात्राओं की विभिन्न परिस्थितियों का सर्वेक्षण किया गया है। तृतीय अध्याय में पूर्व

विवेच्यकालीन संस्कृति और हिन्दी यात्रा साहित्य का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में हिन्दी यात्रा साहित्य के परिप्रेक्ष्य में दार्शनिक आयाम की चर्चा की गई है। पंचम अध्याय में धार्मिक आयाम का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में नैतिक आयाम का विश्लेषण किया गया है। सप्तम अध्याय में अन्य सांस्कृतिक आयामों का अध्ययन किया है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेतों का अभाव है। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा प्रभावशाली है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

12. शोधार्थी - सचदेवा, सुमन

शोध-विषय - भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के संबंध में क्रान्तिकारियों की हिन्दी आत्मकथाओं का अध्ययन

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - विश्वबंधु

वर्ष - 1996

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **367** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में आत्मकथा साहित्य का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का विश्लेषण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में उपजीव्य सामग्री के कथ्य का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में सामाजिक परिवेश का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में विवेच्य आत्मकथाओं में उपलब्ध मानव-मूल्यों का चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय में उपजीव्य सामग्री के परिप्रेक्ष्य में शिल्प का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत में दी गई है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क नहीं रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

13. शोधार्थी - दहिया, लीलाराम

शोध-विषय - साठोत्तरी हिन्दी निबन्ध ः कथ्य और शिल्प

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - सिंह, राजेन्द्र

वर्ष - 1998

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **351** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में निबन्ध का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में कथ्य और शिल्प का तात्त्विक अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में साठोत्तरी हिन्दी साहित्य का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में हिन्दी निबन्ध साहित्य के परिप्रेक्ष्य में कथ्य के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में साठोत्तरी हिन्दी निबन्ध साहित्य के परिप्रेक्ष्य में राजनीतिक चेतना का चित्रण किया गया है। षष्ठ अध्याय में सामाजिक चेतना का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में पारिवारिक चेतना का अध्ययन किया गया है। अष्टम अध्याय में शिल्प पक्ष का विवेचन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची सही है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत उपलब्ध नहीं होते। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा तथा विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क नहीं रहा है। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

14. शोधार्थी - पंडित, सुनीता

शोध-विषय - हजारी प्रसाद द्विवेदी और विद्या निवास मिश्र के आत्मपरक निबन्धों का तुलनात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - रैणा, कृष्णा

वर्ष - 1998

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **201** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में हिन्दी निबन्ध का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में द्विवेदी और मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में हजारी प्रसाद द्विवेदी और विद्या निवास मिश्र के सांस्कृतिक निबन्धों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में भावात्मक निबन्धों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में प्रकृतिपरक निबन्धों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में प्रेरक विभूतियों से संबंधित निबन्धों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में विविध विषयों से संबंधित निबन्धों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची ठीक है तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत नहीं हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

15. शोधार्थी - कुमार, मनोज

शोध-विषय - हिन्दी डायरी साहित्य ः स्वरूप और विकास

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - गुप्त, लालचंद 'मंगल'

वर्ष - 1999

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **273** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में हिन्दी डायरी साहित्य के स्वरूप का विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हिन्दी की नव्यतर विधाओं के परिप्रेक्ष्य में डायरी का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में डायरी विधा के उद्भव एवं विकास का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में लेखकों के जीवनकाल में प्रकाशित डायरियों के संदर्भ में हिन्दी के डायरी साहित्य के विकास का चित्रण किया गया है। पंचम अध्याय में लेखकों के जीवनोपरांत में प्रकाशित डायरियों के संदर्भ में हिन्दी के डायरी साहित्य के विकास का विवेचन किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा व विराम चिह्नों की अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी उत्तम कोटि के हैं।

16. शोधार्थी - रानी, कमला

शोध-विषय - ललित निबन्धकार विवेकीराय ः प्रतिपाद्य एवं शिल्प

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - सिंहल, बैजनाथ

वर्ष - 1999

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **237** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में ललित निबन्ध का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में विवेकीराय के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय एवं चतुर्थ अध्याय में प्रतिपाद्य के परिप्रेक्ष्य में विवेकीराय के ललित निबन्धों का अध्ययन किया गया है। पंचम एवं षष्ठ अध्याय में शिल्प के परिप्रेक्ष्य में विवेकीराय के ललित निबन्धों का विवेचन किया गया है। अंत में

शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत उपलब्ध नहीं होते। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। संदर्भ-सूची लेखक नामानुक्रम में है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

17. शोधार्थी - सिंह, प्रताप

शोध-विषय - द्विवेदीयुगीन निबन्धकारों की राजनीतिक चेतना

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - सिंह, राजेन्द्र

वर्ष - 1999

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **331** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में निबन्ध का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में राजनीति का तात्त्विक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में चेतना का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में राजनीतिक परिस्थितियों का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में द्विवेदीयुगीन निबन्ध एवं निबन्धकारों का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में द्विवेदीयुगीन निबन्धकारों के निबन्धों के परिप्रेक्ष्य में राजनीतिक चेतना का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। अध्यायों के समक्ष पृष्ठांकन नहीं किया गया है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेतों का पालन किया गया

है। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा सुगठित है। मात्रा तथा विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध का टंकण कार्य ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

18. शोधार्थी - खां, मोहमद आरिफ

शोध-विषय - विद्यानिवास मिश्र के निबंधों में शिल्पगत लालित्य

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - शर्मा, सन्तोष कुमारी

वर्ष - 2000

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **284** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व के वर्णन के साथ, निबंध का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में विद्यानिवास मिश्र के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं तद्युगीन परिवेश का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में विद्यानिवास मिश्र के निबंध एवं निबन्धेत्तर साहित्य का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में विद्यानिवास मिश्र के निबंधों के परिप्रेक्ष्य में शिल्प-विधान और लालित्य का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में शोध-विषय का सार तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत नहीं दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

19. शोधार्थी - धवन, राजेन्द्र कुमार

शोध-विषय - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी पत्रकारिता और साहित्यकार ः अंतःसंबंधों का अध्ययन

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - परेश

वर्ष - 2000

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **256** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में पत्रकारिता का तात्त्विक विवेचन गया है। तृतीय अध्याय में साहित्यकारों का सरोकार, साहित्य और पत्रकारिता का संबंध, अभिव्यक्ति की आवश्यकता, समाचार पत्रों का प्रकाशन आदि का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में समाचार पत्रों के विषयों का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में साहित्य की समानान्तरता का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में समसामयिक पत्रकारिता और लेखन को विश्लेषित किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

20. शोधार्थी - सिंह, महेन्द्र

शोध-विषय - जैनेन्द्र कुमार के निबन्ध साहित्य का मूल्यांकन

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - बाबूराम

वर्ष - 2000

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **256** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में जैनेन्द्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय

अध्याय में हिन्दी निबन्ध का तात्त्विक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में जैनेन्द्र के निबन्धों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में कथ्य के दृष्टि से जैनेन्द्र के निबन्धों का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में शिल्प के परिप्रेक्ष्य में जैनेन्द्र के निबन्धों का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण ठीक हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अनुच्छेदों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट, शैली प्रवाहपूर्ण है। अशुद्धियां अल्प हैं एवं टंकण अच्छा है। जिल्दबंदी मजबूत है।

21. शोधार्थी - राठी, सुधा

शोध-विषय - हिन्दी साहित्यकारों की आत्मकथाओं में रचना-प्रक्रिया का विश्लेषण

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - मिश्र, बंधु

वर्ष - 2001

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **303** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में रचना-प्रक्रिया का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में आत्मकथा का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में आत्मकथा साहित्य के विकास व वर्गीकरण का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में रचना-प्रक्रिया का आख्यान करने के क्रम में अपनी कृतियों की सृजन-प्रक्रिया का विवेचन करने वाले आत्मकथाकारों का परिचय दिया गया है। षष्ठ अध्याय में आंशिक रचना-प्रक्रिया का आख्यान करने वाले आत्मकथाकारों को विश्लेषित किया गया है। सप्तम अध्याय में आत्मकथा की रचना-प्रक्रिया का उल्लेख किया गया है। अष्टम अध्याय

में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची सही है। अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक नहीं दिए गए हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा-शैली स्पष्ट है। मात्रात्मक अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध-टंकण उत्तम एवं जिल्दबंदी मजबूत हैं।

22. शोधार्थी - शर्मा, सरयू

शोध-विषय - हिन्दी ललित निबन्धों में मिथकीय चेतना

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - गौतम, मीरा

वर्ष - 2001

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **318** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में ललित निबन्ध का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में मिथकीय चेतना का सैद्धान्तिक अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में मिथकीय चेतना के परिप्रेक्ष्य में साहित्यिक विधाओं का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में मिथकीय चेतना के परिप्रेक्ष्य में शुक्लयुगीन ललित निबन्धों का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में मिथकीय चेतना के परिप्रेक्ष्य में शुक्लोत्तर ललित निबन्धों का चित्रण किया गया है। षष्ठ अध्याय में मिथकीय चेतना के परिप्रेक्ष्य में समकालीन ललित निबन्धों का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। भाषागत व वर्तनी अशुद्धियां हैं। प्रबंध का टंकण तथा जिल्दबंदी सामान्य हैं।

23. शोधार्थी - कुमार, कृष्ण

शोध-विषय - हिन्दी संस्मरण विधा का विश्लेषणात्मक अध्ययन ः सन् **1980** से **2000** तक

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - शर्मा, वेदव्रत

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **303** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में हिन्दी संस्मरण का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में संस्मरण का अन्य गद्य विधाओं से साम्य और वैषम्य का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में हिन्दी संस्मरण के उदभव् और विकास **(1900-1980)** का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में संस्मरण साहित्य **(1980-2000)** का सामान्य परिचय दिया गया है। पंचम अध्याय में संस्मरण **(1980-2000)** का वस्तुगत विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में शिल्पगत अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा पृष्ठांकन ठीक हैं। अध्याय व्यवस्थित है। पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेतों का उल्लेख किया गया है। प्रबंध की भाषा सुगम है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सजग रहा है। टंकण-कार्य उत्तम तथा सुपाठ्य है, जिल्दबंदी अच्छी है।

24. शोधार्थी - कुमार, देवेन्द्र

शोध-विषय - सरस्वती पत्रिका और मानव-मूल्य

(**1925** ई. तक प्रकाशित प्रतिनिधि लेखों, कहानियों और कविताओं आदि के विशेष संदर्भ में)

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - सूद, हरमोहन लाल

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **300** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में सरस्वती पत्रिका का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में मानव-मूल्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में सरस्वती पत्रिका के परिप्रेक्ष्य में महावीर प्रसाद द्विवेदी का परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में सरस्वती पत्रिका में मानव-मूल्य के परिप्रेक्ष्य में कविताओं का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में लेखों का चित्रण किया गया है। षष्ठ अध्याय में कहानियों तथा अन्य विधाओं का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रात्मक त्रुटियां व वर्तनी के प्रयोग की अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध-टंकण स्पष्ट है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

25. शोधार्थी - कुमार, संदीप

शोध-विषय - हिन्दी गद्य विधा में साक्षात्कार का विश्लेषण **(**सन् **1976** से **2000** तक**)**

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - गौतम, मीरा

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **327** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में हिन्दी साक्षात्कार का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हिन्दी साक्षात्कार विधा के उद्भव और विकास का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में कथ्य-तथ्य एवं विवेचनाओं के संदर्भ में साक्षात्कार का उल्लेख किया गया है। चतुर्थ अध्याय में हिन्दी साक्षात्कार साहित्य का वर्गीकरण किया गया है। पंचम अध्याय में हिन्दी के प्रमुख साक्षात्कारों

के साक्षात्कारों का तात्त्विक विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियां रह गई हैं। प्रबंध का टंकण सामान्य स्तर का है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

26. शोधार्थी - देवी, सुनीता

शोध-विषय - विद्यानिवास मिश्र के निबंध साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - गौतम, मीरा

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध 9 अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल 380 पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में सांस्कृतिक अध्ययन का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में सामाजिक अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में मिश्र के निबंध साहित्य का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में धार्मिक अध्ययन का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में दार्शनिक अध्ययन का चित्रण किया गया है। षष्ठ अध्याय में कलात्मक अध्ययन का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में राजनीतिक अध्ययन का विवेचन किया गया है। अष्टम अध्याय में सांस्कृतिक युगबोध का अध्ययन किया गया है। नवम अध्याय में भाषा का सांस्कृतिक अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। उपशीर्षक दिए गए हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा संयत

है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध का टंकण कार्य ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

27. शोधार्थी - सिंह, ईश्वर

शोध-विषय - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी निबन्ध साहित्य में ग्रामीण संस्कृति

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - वेदालंकार, विजय कुमार

वर्ष - 2002

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **305** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में हिन्दी निबन्ध साहित्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी निबन्ध साहित्य के परिप्रेक्ष्य में ग्रामोन्मुखता का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में ग्राम-जीवन का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में अध्यात्म का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में ग्राम-संस्कृति के रूपों का चित्रण किया गया है। षष्ठ अध्याय में ग्राम-संस्कृति के योगदान का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक दिए गए हैं। उपसंहार में शोध-संकेत उपलब्ध हैं। प्रबंध की भाषा संयत तथा स्पष्ट है। वर्तनी तथा मात्रा संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध का टंकण तथा जिल्दबंदी सामान्य हैं।

28. शोधार्थी - कुमारी, बिमला

शोध-विषय - भारतेन्दुयुगीन निबंधों में आर्य समाज का प्रभाव

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - सिंह, राजेन्द्र

वर्ष - 2003

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **254** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में आर्य समाज का अध्ययन किया गया है। द्वितीय अध्याय में निबंध, निबंधकार एवं परिस्थितियों का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में आर्य समाज के संदर्भ में भारतेन्दुयुगीन निबंधों में राजनीति का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में अर्थव्यवस्था का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में सामाजिक चिन्तन का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में धर्म का चित्रण किया गया है। सप्तम अध्याय शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित है। पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। कहीं-कहीं मात्रा व विराम चिह्नों संबंधी अशुद्धियां हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उच्च स्तर का है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

29. शोधार्थी - खन्ना, रमा

शोध-विषय - हिन्दी साहित्यिक पत्रिकाओं के सम्पादकीय लेखों में निहित चिन्तन-दृष्टि **(1970-2000)**

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - गौतम, मीरा

वर्ष - **2004**

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **8** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **364** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में साहित्यिक पत्रकारिता एवं उसके इतिहास का अध्ययन किया गया है। द्वितीय अध्याय में साहित्यिक पत्रिकाओं के संपादकीय लेखों के स्वरूप का विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में साहित्यिक पत्रिकाओं का वर्गीकरण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में हिन्दी की साहित्यिक पत्रिकाओं के संपादकीय लेखों में निहित चिन्तन-दृष्टि का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में संपादकीय लेखों के विषयों का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में साहित्यिक पत्रकारिता में चिन्तन-दृष्टि के स्वरूप का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में

हिन्दी की साहित्यिक पत्रिकाओं के संपादक-लेखों में भारी संभावनाओं का चित्रण किया गया है। अष्टम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन सही है। पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेतों का पालन किया गया है। प्रबंध की भाषा सरल, शैली सुगठित है। मात्रा एवं विराम चिह्नों का शुद्ध प्रयोग दृष्टिगत होता है। प्रबंध का टंकण एवं जिल्दबंदी उत्तम हैं।

30. शोधार्थी - बधवार, नरेन्द्र कुमार

शोध-विषय - संसार चन्द्र के व्यंग्यात्मक निबंध साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - बेदी, हरमहेन्द्र सिंह

वर्ष - 2005

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **189** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में हिन्दी व्यंग्यात्मक निबंध साहित्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में संसार चन्द्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में संसार चन्द्र के व्यंग्यात्मक निबंध साहित्य के विविध आयामों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में संसार चन्द्र के व्यंग्यात्मक निबंध साहित्य का मूल्यांकन किया गया है। पंचम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची एवं अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत मिलते हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। विराम चिह्नों की त्रुटियां रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उच्च स्तरीय है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

31. शोधार्थी - मीनाक्षी

शोध-विषय - इलेक्ट्रॉनिक युग में पत्रकारिता का बदलता स्वरूप

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - गौतम, मीरा

वर्ष - 2006

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **325** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता के सैद्धान्तिक विवेचन के साथ, इतिहास का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता के बदलते आयामों का विश्लेषण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में वेबसाइट के परिप्रेक्ष्य में इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता का चित्रण किया गया है। पंचम अध्याय में इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता की सीमा और संभावनाओं का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रा, विराम चिह्न व वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधकर्त्री सतर्क रही है। प्रबंध का टंकण तथा जिल्दबंदी उत्तम हैं।

32. शोधार्थी - लाल, कश्मीरी

शोध-विषय - राहुल सांकृत्यायन का परम्परा और निबंध साहित्य के बोध ः कथा-साहित्य, यात्रा-साहित्य के संदर्भ में।

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - सहगल, सत्यपाल

वर्ष - 2006

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **274** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित

की गई है। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में परम्परा बोध का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में राहुल सांकृत्यायन के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं तद्युगीन परिवेश का वर्णन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में परम्परा-चित्रण के परिप्रेक्ष्य में राहुल सांकृत्यायन के साहित्य का अध्ययन किया गया है। पंचम अध्याय में परम्परा-दृष्टि के परिप्रेक्ष्य में राहुल सांकृत्यायन के साहित्य का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क नहीं रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

33. शोधार्थी - सिंह, रघुवीर

शोध-विषय - अंतिम दो दशकों के हिन्दी निबंधों में लालित्य चेतना

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - गौतम, मीरा

वर्ष - 2006

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **418** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में लालित्य चेतना और हिन्दी निबंधों का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में अंतिम दो दशकों से पूर्व के हिन्दी निबंधों के परिप्रेक्ष्य में लालित्य चेतना का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में अंतिम दो दशकों के हिन्दी निबंधों के परिप्रेक्ष्य में लालित्य चेतना का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में अंतिम दो दशकों के हिन्दी के प्रमुख निबंधकारों के निबंधों के परिप्रेक्ष्य में लालित्य चेतना का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

34. शोधार्थी - कुमारी, ललिता

शोध-विषय - आत्मकथा साहित्य के संदर्भ में दलित अस्मिता की परख और पहचान

विशेष संदर्भ (ओमप्रकाश वाल्मीकी 'झुठन', मोहनदास नैमिशराय 'अपने-अपने पिंजरे', सूरजपाल चौहान 'तिरस्कृत')

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - कौर, जोगेश

वर्ष - 2007

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **233** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में आत्मकथा के सामान्य परिचय के साथ, दलित साहित्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में आत्मकथा साहित्य के परिप्रेक्ष्य में दलित आत्मकथा का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में दलित साहित्य के परिप्रेक्ष्य में ओमप्रकाश वाल्मीकी की आत्मकथा 'झुठन' का विश्लेषण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में मोहनदास नैमिशराय की आत्मकथा 'अपने-अपने पिंजरे' का चित्रण किया गया है। पंचम अध्याय में सूरजपाल चौहान की आत्मकथा 'तिरस्कृत' का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

35. शोधार्थी - गुप्ता, माधुरी

शोध-विषय - भारतेन्दु, द्विवेदी युगीन (सन् **1850-1925**) जीवनी साहित्य में मानव-मूल्य

विश्वविद्यालय - गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

निर्देशक - सूद, हरमोहन लाल

वर्ष - 2007

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **168** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में भारतेन्दु, द्विवेदीयुगीन साहित्य का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में मानव-मूल्य का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में जीवनी साहित्य का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में भारतेन्दुयुगीन जीवनी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में मानव-मूल्य का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में द्विवेदीयुगीन जीवनी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में मानव-मूल्य का चित्रण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची सही है। पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा संयत तथा स्पष्ट है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध-टंकण सुपाठ्य है, जिल्दबंदी अच्छी है।

36. शोधार्थी - चौधरी, अनीता

शोध-विषय - हिन्दी आत्मकथा साहित्य को विष्णु प्रभाकर की देन

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - आर्य, ओमपाल

वर्ष - 2007

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **6** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **334** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में हिन्दी आत्मकथा साहित्य का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हिन्दी साहित्य में आत्मकथा के उद्भव और विकास का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में हिन्दी आत्मकथा साहित्य को विष्णु प्रभाकर की कथ्यगत देन का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में शिल्पगत देन का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में विष्णु प्रभाकर की आत्मकथा के वैशिष्टय् का चित्रण किया गया है। षष्ठ अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम मध्य भाग में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। प्रबंध की भाषा संयत है। मात्रा व विराम चिह्नों की अशुद्धियां हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी उच्च स्तर के हैं।

37. शोधार्थी - लाल, बंशी

शोध-विषय - हिन्दी पत्रकारिता के विकास में डॉ. अम्बेड़कर का योगदान

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - गौतम, मीरा

वर्ष - 2007

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **247** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में डॉ. अम्बेड़कर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में पत्रकारिता का तात्त्विक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में डॉ. अम्बेड़कर के बुद्धिजीवी रूप का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में हिन्दी पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य में डॉ. अम्बेड़कर के साहित्य का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में हिन्दी पत्रकारिता के विकास में डॉ. अम्बेड़कर के योगदान और चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में वर्तमान युग के परिप्रेक्ष्य में डॉ. अम्बेड़कर की पत्रकारिता की प्रासंगिकता का उल्लेख किया गया है। सप्तम

अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-नियमों के अनुरूप है। विषय-सूची व्यवस्थित है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। मात्रा, विराम चिह्न व वर्तनी संबंधी अशुद्धियां रह गई हैं। प्रबंध-टंकण ठीक है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

38. शोधार्थी - कुमार, दिनेश

शोध-विषय - महिला रचनाकारों की आत्मकथाओं में स्त्री-चेतना

(**1980** से **2005** तक प्रकाशित हिन्दी तथा उर्दू, पंजाबी, बंगला एवम् मराठी से अनुदीत प्रमुख आत्मकथाओं के संदर्भ में)

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - अग्रवाल, रोहिणी

वर्ष - 2008

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **312** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में आत्मकथा का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में स्त्री-चेतना का सैद्धान्तिक अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में महिला रचनाकारों की आत्मकथाओं में चित्रित पितृ सत्तात्मक व्यवस्था का विश्लेषण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक संघर्ष के विविध आयामों का चित्रण किया गया है। पंचम अध्याय में आर्थिक स्वावलम्बन के परिप्रेक्ष्य में संघर्ष का उल्लेख किया गया है। षष्ठ अध्याय में विवेच्य महिला रचनाकारों की आत्मकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा संयत, शैली प्रवाहपूर्ण है।

मात्रात्मक त्रुटियां व वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अल्प हैं। प्रबंध का टंकण कार्य तथा जिल्दबंदी उच्च कोटि के हैं।

39. शोधार्थी - गीतू

शोध-विषय - हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता का बदलता स्वरूप

विश्वविद्यालय - महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

निर्देशक - मिश्र, नरेश **सह-निर्देशक -** शर्मा, गीता

वर्ष - 2008

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **232** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में पत्रकारिता का तात्त्विक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में पत्रकारिता के उद्भव और विकास का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में पत्रकारिता के विविध रूपों का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में स्वतंत्रता पूर्व प्रकाशित हिन्दी की साहित्यिक पत्रिकाओं के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी की साहित्यिक पत्रिकाओं के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुख शोध-प्रविधि के अनुकूल है। विषय-सूची तथा पृष्ठांकन व्यवस्थित हैं। अध्यायीकरण तथा पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रात्मक त्रुटियां तथा वर्तनी के प्रयोग की अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

40. शोधार्थी - कुमार, विजय

शोध-विषय - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी यात्रा साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - रानी, पुष्पा

वर्ष - 2009

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **7** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **235** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में हिन्दी यात्रा साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हिन्दी यात्रा साहित्य की पृष्ठभूमि का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी यात्रा साहित्य के सामाजिक आधार पर सांस्कृतिक दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में धार्मिक आधार पर सांस्कृतिक दृष्टिकोण का चित्रण किया गया है। पंचम अध्याय में राजनीतिक आधार पर सांस्कृतिक दृष्टिकोण का विश्लेषण किया गया है। षष्ठ अध्याय में आर्थिक, शैक्षिक और कला के आधार पर सांस्कृतिक दृष्टिकोण का उल्लेख किया गया है। सप्तम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - प्रबंध का मुखपृष्ठ शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित तथा वर्गीकृत हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। संदर्भ-सूची अध्यायों के अंत दी गई है। अध्यायों में उपशीर्षक रेखांकित हैं। उपसंहार में शोध-संकेत उपलब्ध हैं। प्रबंध की भाषा सुगठित है। व्याकरण संबंधी अशुद्धियां कम हैं। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी उत्तम हैं।

41. शोधार्थी - कुमार, फूल

शोध-विषय - हिन्दी की दलित आत्मकथाओं का तात्त्विक एवं वैचारिक अध्ययन

विश्वविद्यालय - कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र

निर्देशक - चन्द, सुभाष

वर्ष - 2010

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत वृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **297** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में हिन्दी की दलित आत्मकथाओं का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हिन्दी की दलित आत्मकथाओं का सामान्य परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में हिन्दी की दलित आत्मकथाओं का तात्त्विक अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में हिन्दी की

दलित आत्मकथाओं का वैचारिक विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों का पालन करता है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची तथा अध्यायीकरण व्यवस्थित हैं। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह किया गया है। अनुच्छेदों में उपशीर्षक हैं। उपसंहार में शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल, शैली प्रवाहमयी है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण तथा जिल्दबंदी ठीक हैं।

42. शोधार्थी - कुमार, सुरेन्द्र

शोध-विषय - हिन्दी के पु ष साहित्यकारों की आत्मकथाओं में अभिव्यक्त परिवेश ः **1975** ई. से **2000** ई. तक प्रकाशित आत्मकथाओं के संदर्भ में

विश्वविद्यालय - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

निर्देशक - नीरू

वर्ष - 2010

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **10** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **591** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन तथा विषय के महत्त्व का वर्णन किया गया है। द्वितीय अध्याय में परिवेश का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में आत्मकथा का तात्त्विक अध्ययन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में हिन्दी आत्मकथा विकास का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में विवेच्य आत्मकथाओं के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक परिवेश का अध्ययन किया गया है। षष्ठ अध्याय में राजनीतिक परिवेश का अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में आर्थिक परिवेश का विवेचन किया गया है। अष्टम अध्याय में साहित्यिक परिवेश का अध्ययन किया गया है। नवम अध्याय में सांस्कृतिक परिवेश का चित्रण किया गया है। दशम अध्याय में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय एवं उपलब्धियों का वर्णन किया गया है। अंत में परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह

यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत दिए गए हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

43. शोधार्थी - पुरी, जुगल किशोरी

शोध-विषय - डॉ. संसार चन्द्र के निबंधों में व्यंग्य

विश्वविद्यालय - जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

निर्देशक - सराफ़, नीलम

वर्ष - 2010

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **4** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **225** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में निबंध साहित्य के विकास और व्यंग्यात्मक निबंध का अध्ययन किया गया है। द्वितीय अध्याय में हास्य और व्यंग्य का तात्त्विक विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में संसार चन्द्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में संसार चन्द्र के निबंधों के परिप्रेक्ष्य में व्यंग्य के भेद एवं प्रविधियों का अध्ययन किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर अंकित शीर्षक शोध-प्रविधि के नियमों के अनुकूल है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम क्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। अध्यायीकरण तथा पृष्ठांकन व्यवस्थित हैं। पाद-टिप्पणियां यथानियम हैं। अनुच्छेदों में शीर्षक-उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा स्पष्ट तथा प्रभावशाली है। मात्रात्मक त्रुटियां व वर्तनी संबंधी अशुद्धियां कहीं-कहीं रह गई हैं। प्रबंध का टंकण कार्य उच्च स्तर का है तथा जिल्दबंदी मजबूत है।

44. शोधार्थी - सिंह, मलकीयत

शोध-विषय - साहित्यिक पत्रिका 'दस्तावेज' का ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय - हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

निर्देशक - कुमार, कृष्ण

वर्ष - 2010

वर्णनात्मक सर्वेक्षण - प्रस्तुत बृहत् शोध-प्रबंध **5** अध्यायों में विभक्त है तथा इसके कुल **325** पृष्ठ हैं। पुरोवाक् में शोध-प्रबंध विषयक जानकारी देते हुए अंत में सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है। प्रथम अध्याय में 'दस्तावेज' पत्रिका का सामान्य परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में 'दस्तावेज' पत्रिका में प्रकाशित सृजनात्मक साहित्य का अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय में 'दस्तावेज' पत्रिका में प्रकाशित पुस्तक-समीक्षाओं का विवेचन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में 'दस्तावेज' पत्रिका में प्रकाशित वैचारिक साहित्य का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में समकालीन भारतीय साहित्य और विदेशी साहित्य के अध्ययन में 'दस्तावेज' पत्रिका के योगदान का उल्लेख किया गया है। अंत में शोध-विषय का सार, शोध संबंधी निर्णय, उपलब्धियां, परिशिष्ट तथा सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है।

शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन - मुखपृष्ठ पर मुद्रित शीर्षक शोध-प्रविधि के अनुरूप है। विश्वविद्यालय व उपाधि नाम भी निश्चितक्रम में हैं। विषय-सूची ठीक है। पृष्ठांकन तथा पाद-टिप्पणियों का निर्वाह यथानियम है। अध्यायों में उपशीर्षक हैं। शोध-संकेत हैं। प्रबंध की भाषा सरल है। मात्रा तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के प्रति शोधार्थी सतर्क रहा है। प्रबंध-टंकण उत्तम है तथा जिल्दबंदी सशक्त है।

विवेच्य विश्वविद्यालयों में इतर हिन्दी गद्य साहित्य (कथा-साहित्य एवं नाटक साहित्य से इतर) संबंधी **44** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं। सबसे ज्यादा शोध-प्रबंध कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र में उपलब्ध हुए हैं। यहां पर कुल **14** शोध-विषयों पर शोध-कार्य हुआ है। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक में **10** शोध-विषयों पर, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में **9** शोध-विषयों पर, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में **5** शोध-विषयों पर, गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में **4** शोध-विषयों पर, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू **1** में शोध-विषय पर तथा पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में भी **1** शोध-विषय पर शोध-कार्य सम्पन्न हुआ है।

निष्कर्षतः विवेच्य विश्वविद्यालयों में नाटक एवं एकांकी तथा इतर हिन्दी गद्य साहित्य (कथा-साहित्य एवं नाटक साहित्य से इतर) संबंधी **146** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक में **37** शोध-विषयों (**27** नाटक, **7** निबंध, **2** पत्रकारिता तथा **1** आत्मकथा) पर, कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र में **34** शोध-विषयों (**19** नाटक, **1** एकांकी, **5** निबंध, **1** यात्रा-साहित्य **3** पत्रकारिता, **2** आत्मकथा, **1** डायरी-विधा, **1** संस्मरण-विधा तथा **1** साक्षात्कार-

साहित्य) पर, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में 27 शोध-विषयों (17 नाटक, 1 एकांकी, 3 निबंध, 2 पत्रकारिता, 3 आत्मकथा तथा 1 साक्षात्कार-साहित्य) पर, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में 15 शोध-विषयों (14 नाटक 1 यात्रा-साहित्य) पर, गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में 14 शोध-विषयों (10 नाटक, 1 निबंध, 2 पत्रकारिता तथा 1 जीवनी-साहित्य) पर, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू 10 में शोध-विषयों (9 नाटक तथा 1 निबंध) पर, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में 8 शोध-विषयों (3 नाटक, 1 निबंध, 3 पत्रकारिता तथा 1 आत्मकथा) पर तथा कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर में 1 शोध-विषय (1 नाटक) पर शोध-कार्य हुआ है।

विवेच्य विश्वविद्यालयों में नाटक पर अच्छा काम हुआ है। एकांकी साहित्य पर बहुत अल्प कार्य हुआ है। नाटक साहित्य पर 100 शोध-प्रबंध मिले हैं। एकांकी साहित्य पर कुल 2 शोध-प्रबंध उपलब्ध हुए हैं। निबंध संबंधी 18 शोध-विषयों पर शोध-प्रबंध सम्पन्न हुए हैं। पत्रकारिता संबंधी 12 शोध-प्रबंध, यात्रा-साहित्य संबंधी 2 शोध-प्रबंध, आत्मकथा साहित्य पर 7 शोध-प्रबंध, जीवनी विधा पर 1 शोध-प्रबंध, साक्षात्कार साहित्य पर 2 शोध-प्रबंध, डायरी-विधा पर 1 शोध-प्रबंध तथा संस्मरण विधा पर भी 1 शोध-प्रबंध मिला है।